ॐ 7-7

पलिवारमठ प्रकाशन माला का प्रथम पुष्प

नित्यकर्म-शिवोपासना

सम्पादक :

स्वामी कोशलेन्द्रपुरी, एम. ए. (राजशास्त्र, संस्कृत)

आचार्य (प्राचीन राजशास्त्र अर्थशास्त्र)

बी. एड्. म्युजिक डिप्लोमा।

अध्यक्ष :

मठपलिवार, मुकाम, पोस्ट-पलिवार, जिला-गाजीपुर (उ. प्र.)

पुनः प्रकाशन हेतु मूल्य

२) रुपये मात्र

प्रकाशक मण्डल

श्री प्रेमचन्द जी गोयल

श्री महावीर प्रसाद गुप्त

श्री भगवान दास जी मोंगा

श्री भगत रामप्यारा

●

विजय दशमी विक्रम सम्वत् २०३५

तदनुसार ११-१०-१९७८ ई०

●

प्रथम आवृत्ती-१०००

दिल्ली ।

●

●

मुद्रक :

विराट प्रिंटिंग एजेन्सी

७१०८, गली पहाड़ वाली,

पहाड़ी धीरज, देहली-६

परिचयात्मिका शुभा संशा

संन्यासी का जीवन त्याग का जीवन है, वह गहन अन्धकार से समाज को सदैव एक नया दिशा बोध प्रदान करता रहा है। प्राचीन युग से लेकर आज तक संन्यासी समाज को श्रृंखलावद्ध रूप में रखता चला आ रहा है, मैं इन्हीं कड़ियों में स्वामी कोशलेन्द्र पुरी जी को देखता हूं।

आप मेरे अनन्य मित्रों में से हैं। अपने अध्ययन काल में ही इन्होंने सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया था। काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय में रहते हुए सभी वर्ग के स्नेह भाजन वनकर एवम् समाज सेवी के रूप में आप स्वयं को प्रतिष्ठित कर चुके हैं। आपने आचार्य प्राचीन राजशास्त्र अर्थशास्त्र एम० ए० संस्कृत एवं राजशास्त्र विषय से किया है।

आपके ओज एवं धार्मिकता के प्रति महान कटिवद्धता को देखते हुए एक महान स्वतंन्त्रता सेनानी संत श्री स्वामी धनराज पुरी जी महाराज, (पलिवार मठ) त:-सैदपुर ब्लाक:-सादात, जि०-गाजी-पुर ने आपको अपना शिष्य वनाकर अपना लिया। आपके निर्देशन में अनेक संस्थायें कार्यरत हैं, जिनसे समाज लाभान्वित हो रहा है, जिनमें प्रमुख हैं:—महात्मा गाँधी जूनियर हाई स्कूल (पलिवार) एवम् श्री स्वामी दूलम पुरी चिकित्सालय (पलिवार) इत्यादि। यद्यपि कोशलेन्द्र पुरी जी का मुख्य प्रचार केन्द्र पूर्वी उ० प्र० के वाराणसी, गाजीपुर आजमगढ़, जौनपुर देवरिया और गोरखपुर ही हैं, परन्तु संन्यासी का कैसा प्रचार क्षेत्र? वह तो असीमित एवम् अनन्त हैं। हमारे प्राचीन ऋषियों ने हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण वनाये रक्खा है, कितने ही विदेशी शासक आये, और उन्होंने शासन

किया परन्तु धन्य है हमारी संस्कृति जिसने उन सभी को अपने में आत्मसात कर लिया। यही कारण है आज भी भारतीय संस्कृति अपना अलग अस्तित्व रखती है।

आपने अपने अनन्य भक्तों के आग्रह पर इस नित्यकर्म पुस्तक का प्रकाशन किया है जिससे समाज के साधारण वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक के लोग लाभान्वित होंगे।

अन्त में मेरी भगवान-भूत भावन, अकारण करुणा वरुणालय राज-राजेश्वर विश्वरूप विश्वेश्वर से प्रार्थना है कि इस जीवन-ज्योति को इतनी शक्ति एवम् सामर्थ्य दें ताकि वह समाज के कल्याणार्थ अपनी सेवा समर्पित कर सके।

आपका अपना ही
स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
२५।८।१९७८

शुभ कामना

संतप्त संसार के सुख हेतु नित्य कर्म-शिवो-पासना परमावश्यक है। इस संदर्भ में श्री स्वामी कोशलेन्द्रपुरी जी का यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है।

शुभाकांक्षी :
स्वामी राघवानन्द
गुरु रामराय दरवार
नई दिल्ली-५५

दो शब्द

संसार का प्रत्येक मानव सुखकी चाह में दर-दर की ठोकरें खाता है किन्तु वदले में दुख ही पाता है।

वास्तव में सुख का ठौर कहां है यह तो कवीर के इस दोहे से ही पता चलता है:—

सुख के हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जन की।
दुआ रिह दुआर सुआन ज्यों डोलत नहि सुधि राम भजन की ॥

संसार के लोग सुख की तलाश में दुनिया के विषया सक्त जीवों की दिनरात सेवा में तत्पर हैं, किन्तु उससे असली सुख मिलना असम्भव है। मानों संसार की सेवा से उसे सांसारिक सुख मिल भी जाय तो भी क्या उससे शान्ति मिल सकती है?

अत: लोक परलोक दोनों में सुख चाहिये तो सत्पुरुषों की सेवा और ईश्वर उपासना श्रावश्यक है जैसा कि:—

जिस घर हरि भक्ति नहीं, सन्त नहीं मेहमान।
ता घर यम डेरा कियो, जीवत भयो मसान ॥

यदिसंत सेवा और ईश्वर भजन नहीं होगा तव तो घर श्मसान हो जायगा किन्तु उस घरमें भगवान की उपासना और संत सेवा होने लगे तो वहघर कैलाश पुरी के समान पवित्र हो जायगा। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर ही यह छोटा सा प्रयास "नित्य कर्म" के रूप में किया गया है।

इस छोटी सी पुस्तक में संध्यावन्दन एवं भगवान शिव की पूजन विधि के साथ-साथ कुछ शिव स्तोत्रों का संकलन हिन्दी अर्थ के साथ किया है। इससे यदि आप सब थोड़ा सा भी फायदा उठा पायेंगे तो मैं अपने आपको कृत कृत्य समझूंगा। इसके प्रकाशन में जिन-जिन सज्जनों ने तन-मन एवं धन से सहयोग किया है उनमें मुख्य हैं छपाई का पूरा व्यय श्री भगवानदासजी मोंगा वी १३ विशाल इन्क्लेव ने किया एवं श्री महावीर प्रसाद गुप्त तथा श्री प्रेम-चन्द जी गोयल का भी मैं हृदय से आभारी हूं। आपने तनमन से पूरी सेवा की है।

अन्त में मेरे अपने दो अभिन्न मित्र श्री स्वामी राघवानन्द जी महाराज अध्यक्ष श्री गुरु रामराय दरबार आराम बाग दिल्ली और श्री स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष परमार्थ मन्दिर सफदर-जंग दिल्ली का भी हृदय से आभारी हूं। आप दोनों महापुरुषों ने अपनी शुभ कामना से मेरा उत्साह वर्धन तो किया ही है साथ-साथ सब प्रकार से सहयोग भी किया है।

आप सबका अपना

स्वामी कोशलेन्द्र पुरी (केशवानन्द)

अध्यक्ष मठ पलिवार जिला-गाजीपुर (उ० प्र०)

शिव आरधनारत श्री स्वामी कोशलेन्द्र पुरी जी महाराज

एम. ए. (राजशास्त्र एवं संस्कृत) आचार्य (प्राचीन राजशास्त्र अर्थ शास्त्र)

बी. एड्. म्युजिक डिप्लोमा ।

अध्यक्ष—मठपलिवार, मु. पोस्ट-पलिवार, जिला-गाजीपुर (उ. प्र.)
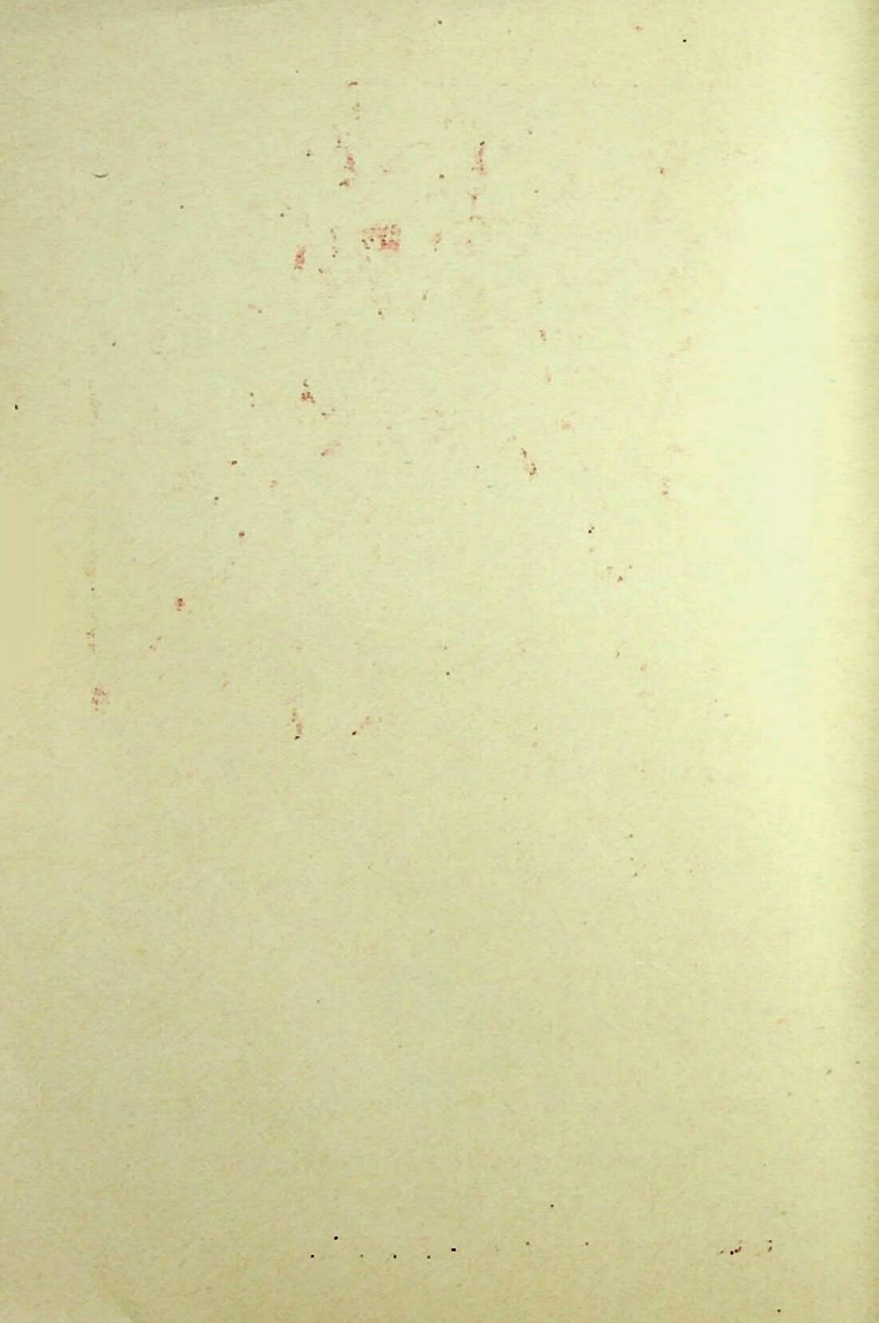
संध्योपासनविधि

ब्राह्म मुहूर्त में जब चार घड़ी रात बाकी रहें, शयन से उठकर भगवान् का स्मरण करे, फिर शौच-स्नान के अनन्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके पवित्र तथा एकान्त स्थान में कुश अथवा कम्बल आदि के आसन पर पूर्व, ईशान अथवा उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठे तीनों काल की संध्या में उर्पयुक्त दिशाओं की ओर ही मुँह करके बैठना चाहिए, केवल सूर्यार्घ्यदान, सूर्योपस्थान और गायत्री जप सूर्याभिमुख होकर करना आवश्यक है। बाँये हाथ में तीन कुश और दायें हाथ में दो कुशों की बनी हुई पवित्री 'ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ' इस मन्त्र से धारण करें। कुश के अभाव में सोने, चाँदी अथवा ताँबे की अँगूठी पहन कर भी कार्य किया जा सकता है। ओंकार और व्याहृतियों सहित गायत्री-मन्त्र का उच्चारण करके शिखा बाँध लें। एक जोड़ा शुद्ध यज्ञोपवीत धारण किए रहना आवश्यक है। देह पर धौतवस्त्र के अतिरिक्त एक उत्तरीय वस्त्र (चादर या गमछा आदि) डाले रहना चाहिए। उत्तरीय वस्त्र के अभाव में एक और यज्ञोपवीत (कुल मिलाकर तीन यज्ञोपवीत) धारण किए रहें। फिर किसी पात्र में शुद्ध जल रखकर उसे बाँये हाथ में उठा ले और दांये हाथ के कुश से अपने शरीर पर जल सींचते हुए निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़े।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अर्थः—मनुष्य अपवित्र हो या पवित्र किसी भी दशा में स्थित हो, जो पुण्डरीकाक्ष (कमल नयन) भगवान् विष्णु का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर सब ओर से शुद्ध हो जाता है,

फिर नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल छिड़क कर दाँये हाथ से उसका स्पर्श करे—

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

अर्थः—हे पृथ्वी देवि ! तुमने सम्पूर्ण लोकों को धारण कर रखा है और भगवान् विष्णु ने तुमको धारण किया है। हे देवि ! तुम मुझे धारण करो और मेरे आसन को पवित्र कर दो ।

इसके वाद यथारुचि शास्त्रानुकूल भस्म चन्दन आदि का तिलक करे । तत्पश्चात् 'ॐ केशवाय नमः स्वाहा', 'ॐ नारायणाय नमः स्वाहा', 'ॐ माधवाय नमः स्वाहा'—इन तीन मन्त्रों को पढ़कर प्रत्येक से एक-एक वार [कुल तीन वार] पवित्र जल से आचमन करे (आचमन के समय हाथ जानुओं के मीतर हो, पूर्व, ईशान या उत्तर दिशा की ओर ही मुख हो । ब्राह्मण इतना जल पियें, जो हृदय तक पहुँच सके, क्षत्रिय उतना ही जल ग्रहण करे, जो कण्ठ तक पहुँच सके, वैश्य इतना जल ले जो तालुतक जा सके। उस समय ओठ वहुत न खोले, अंगुलिया परस्पर सटी रहें । अंगुष्ठ और कनिष्ठिका अलग रहे । खड़ा न हो, हँसता न रहे । जल में फेन या वुलवुले आदि न हों) । ब्राह्मतीर्थ से तीन वार आचमन करने के पश्चात 'ॐ गोविन्दाय नमः' यह मन्त्र पढ़कर हाथ धोले । इसके वाद दो वार अंगूठे के मूल से ओठ को पोछे फिर हाथ धो ले । अंगूठे का मूल ब्राह्मतीर्थ है । तत्पश्चात् भीगी हुई अंगुलियों से मुख आदि का स्पर्श करें । मध्यमा अनामिका से मुख, तर्जनी अंगुष्ठ से नासिका, मध्यमा-अंगुष्ठ से नेत्र, अनामिका अंगुष्ठ से कान, कनिष्ठिका; अंगुष्ठ से नाभि, दाहिने हाथ से हृदय, सब अंगुलियों से सिर, पाँचों अंगुलियों से दाहिनी वाँह और वाँयी वाँह का स्पर्श करना चाहिए ।

तदनन्तर हाथ में जल लेकर निम्नाङ्कित संकल्प पढ़कर वह जल भूमि पर गिरा दे :—

हरिः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्री ब्रह्मणों द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं मयोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः [शामं अथवा मध्यान्ह] संध्योपासनं करिष्ये ।

इसके वाद निम्नाङ्कित विनियोग पढ़े ।

ऋतं चेति त्यृचस्य माधुचछन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

फिर नीचे लिखे मन्त्र को एक वार पढ़कर एक ही वार आचमन करे :—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धातपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।

अर्थः—[महाप्रलय के वाद इस महाकल्प के आरम्भ में] सव ओर से प्रकाशमान तपरूप परमत्मा से ऋत (सतसंकल्प) और सत्य (यथार्थ भाषण) की उत्पत्ति हुई। उसी परमात्मा से रात्रि-दिन प्रकट हुए तथा उसी से जलमय समुद्र का आविर्भाव हुआ। जलमय

समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् दिनों और रात्रियों को धारण करने वाला कालस्वरूप संवत्सर प्रकट हुआ जो कि पलक मारने वाले जङ्गम प्राणियों और स्थावरों से युक्त समस्त संसार को अपने अधीन रखने वाला है। इसके वाद सबको धारण करने वाले पर-मेश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, दिव, (स्वर्गलोक), पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा महर्लोक आदि लोककी भी पूर्वकल्प के अनुसार सृष्टि की।

तदनन्तर प्रणवपूर्वक गायत्री मन्त्र पढ़कर रक्षा के लिए अपने चारों ओर जल छिड़के। फिर नीचे लिखे विनियोग को पढ़े—

ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवीगायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणाँ सप्तयाहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्त त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्य बृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताः, आपोज्योतिरिति शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायाये विनियोगः।

इसके पश्चात आँखे वन्द करके नीचे लिखे मन्त्र से प्राणायाम करे। उसकी विधि इस प्रकार है पहले दाहिने हाथ के अंगूठे से नासिका का दाँया छेद वन्द करके वाँये छेद से वायु को अन्दर खींचे, साथ ही नाभिदेश में नीलकमल दल के समान श्यामवर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए प्रणायाम मन्त्र का तीन बार पाठ करें [यदि तीन बार मन्त्र-पाठ न हो सके तो एक ही बार पाठ करे और अधिक के लिए अभ्यास वढ़ावे] इसको पूरक कहते है। पूरक के पश्चात अनामिका और कनिष्ठिका अंगुलियों से नासिका के वाँये छेद को भी वन्द करके तव तक श्वास को रोके रहें जव तक कि प्राणायाम-मन्त्र का तीन वार [या शक्ति के अनुसार एक

वार] पाठ न हो जाय। इस समय हृदय के बीच कमल के आसन पर विराजमान अरुण गौर-मिश्रित वर्ण वाले चतुर्मुख ब्रह्मा जी का ध्यान करें। यह कुम्भक क्रिया है। इसके बाद अंगूठा हटाकर नासिका के दाहिने छेद से वायु को धीरे-धीरे तब तक बाहर निकाले, जब तक प्राणायाम मन्त्र का तीन [या एक] बार पाठ न हो जाए। इस समय शुद्ध स्फटिक के समान श्वेत वर्ण वाले त्रिनेत्र-धारी भगवान शंकर का ध्यान करे। यह रेचक-क्रिया है। यह सब मिलकर एक प्राणायाम कहलाता है। प्रणायाम का मन्त्र यह है :—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

अर्थः—हम स्थावर जङ्गमरूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाले निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर के भजने योग्य तेज का ध्यान करते हैं जो कि हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते हैं और जो भू, भुवर्, स्वर्, महर्, जन, तपः और सत्य नाम वाले समस्त लोकों में व्याप्त है; तथा जो सच्चिदानन्दस्वरूप जल रूप से जगत् का पालन करने वाले, अनन्त तेज के धाम, रसमय, अमृतमय और भूर्भुवः स्वः स्वरूप (त्रिभुवनात्मक) ब्रह्म है।

फिर नीचे लिखा विनियोग पढ़ें—

सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यमन्युमन्युपतयो रात्रिश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

तत्पश्चात् निम्नाङ्कित मन्त्र को एक बार पढ़कर एक बार आचमन करें—

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं यमामृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

अर्थः—सूर्य क्रोध के अभिमानी देवता और क्रोध के स्वामी—ये सभी क्रोधवश किये हुए पापों से मेरी रक्षा करे। (अर्थात् कृत पापों को नष्ट करके, होने वाले पापों से बचावें) रात में मैंने मन वाणी हाथ पैर उदर और शिश्न (उपस्थ) इन्द्रिय से जो पाप किये हों, उन सबको रात्रिकालाभियानी देवता नष्ट करे। जो कुछ भी पाप मुझ में वर्तमान है, इसको और इसके कर्तृव्य का अभिमान रखने वाले अपने को मैं मोक्ष के कारण भूत प्रकाशमय सूर्यरूप परमेश्वर में हवन करता हूं [अर्थात हवन के द्वारा अपने समस्त पाप और अहंकार को भस्म करता हूं]। इसका भलीभांति हवन हो जाए।

उपर्युक्त आचमन-मन्त्र प्रातःकाल की संध्या का है। दोपहर और शाम के केवल आचमन—मन्त्र प्रातःकाल से भिन्न है। दोपहर का विनियोग और मन्त्र इस प्रकार है।

आपः पुनन्त्विति नारायण ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़ें फिर नीचे लिखे मन्त्र को एक बार पढ़ कर एक बार आचमन करें—

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवी पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ स्वाहा ॥

अर्थ :—जल पृथ्वी को [प्रोक्षण आदि के द्वारा] पवित्र करे। पवित्र हुई पृथ्वी मुझे पवित्र करे। वेदों के पति परमात्मा मुझे शुद्ध करें। मैंने जो कभी किसी भी प्रकार उच्छिष्ट (झूठा) या अभक्ष्य भक्षण किया हो अथवा इसके अतिरिक्त भी मेरे जो पाप हों, उन सबको दूर करके जल मुझे शुद्ध कर दे. तथा नीच पुरुष से लिये हुए दानरूप दोषों को भी दूर करके जल मुझे पवित्र करें। पूर्वोक्त सभी दोषों का भली-भांति हवन हो जाय।

सायंकाल के आचमन का विनियोग और मन्त्र इस प्रकार है—

अग्निश्च मेति नारायण ऋषिः पृकृतिश्छन्दोऽग्नि-मन्युमन्युपतयोऽहश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़ें। फिर नीचे लिखे मन्त्र को एक वार पढ़कर एक वार आचमन करें—

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

अर्थ :—अग्नि, क्रोध के अभिमानी देवता और क्रोध के स्वामी ये सभी क्रोधवश किए हुए पापों से मेरी रक्षा करे [अर्थात् कृत पापों को नष्ट करके होने वाले पापों से बचावें]। मैंने दिन में मन, वाणी, हाथ, पैर, उदर और शिश्न (उपस्थ) इन्द्रियों से जो पाप किए हों, उन सबको दिन के अभिमानी देवता नष्ट करें। जो कुछ भी पाप मुझ में वर्तमान है, इसको तथा इसके कर्त्तृत्व का अभिमान रखने वाले अपने को मैं मोक्ष के कारण भूत सत्यस्वरूप प्रकाशमय परमे-

श्वर में हवन करता हूं [अर्थात् हवन के द्वारा अपने सारे पाप और अहंकार को भस्म करता हूं]। इसका भली-भाँति हवन हो जाए।

फिर निम्नाङ्कित विनियोग को पढ़े।

आपो हि ष्ठेति त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः।

इसके पश्चात् निम्नाङ्कित तीन ऋचाओं के नौ चरणों में से सात चरणों को पढ़ते हुए सिर पर ही जल सींचे, आठवें से पृथ्वी पर जल डाले और फिर नवें चरण को पढ़कर सिर पर ही जल सींचे। यह मार्जन तीन कुशों अथवा तीन अंगुलियों से करना चाहिए। मार्जन मन्त्र ये हैं—

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्या अरं गमाम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथा च नः।

अर्थ :—हे जल! तुम निश्चय ही कल्याणकारी हो, अतः (अन्नादि रसों के द्वारा) वल की वृद्धि के लिए तथा अत्यन्त रमणीय परमात्मदर्शन के लिए तुम हमारा पालन करो। जिस प्रकार पुत्रों की पुष्टि चाहने वाली माताएँ उन्हें अपने स्तनों का दुग्धपान कराती है, उसी प्रकार तुम्हारा जो परम कल्याणमय रस है, उसके भागी हमें वनाओं। हे जल! जगत् के जीवनाधार भूत जिस रस के अंश से तुम समस्त विश्व को तृप्त करते हो, उस रस की पूर्णता को हम प्राप्त हों [अर्थात उस रस से हम पूर्णयता तृप्ति लाभ करें] हे जल! तुम हमें उस रस के भोक्ता वनाओं [अर्थात उसे भोगने की क्षमता दो]

तदन्तर नीचे लिखे विनियोग को पढ़े —

द्रुपदादि वेत्यश्विसरस्वतीन्दा ऋषयोऽनुप्छन्द आपो देवता: शिरस्से के विनियोग: ॥

फिर वाँये हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढ़क ले और नीचे लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसे सिर पर छिड़क दे—

ॐ द्रुपदादिव मुमुचान: स्विन्न: स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमाप: शुन्धन्तु मैनस :।

अर्थ :—जैसे पादुका से अलग होता हुआ मनुष्य पादुका के मलादि दोषों से मुक्त हो जाता है, जिस प्रकार पसीने से भीगा हुआ पुरुष स्नान करने के पश्चात् मैल से रहित होता है तथा जैसे पवित्रक आदि से घी शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार जल मुझे पापों से शुद्ध करे [अर्थात् मुझे सर्वथा निष्पाप कर दे]।

पुन: निम्नाङ्कित विनियोग—वाक्य को पढ़े —

ऋतञ्चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृतं दैवतमघमर्षणे विनियोग:।

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर नासिका में लगावें और [यदि सम्भव हो तो श्वास रोककर] नीचे लिखे मन्त्र को तीन वार या एक वार पढ़ते हुए मन ही मन यह भावना करे कि यह जल नासिका के वाँये छेद से भीतर, घुसकर अन्त:करण के पापों को दाये छेद से निकाल रहा है, फिर उस जल की ओर दृष्टि न डालकर अपनी वाँयी ओर फेंक दे। [अथवा वामभाग में शिलाकी भावना करके उस पर उस पाप को पटक कर नष्ट कर देने की भावना करे।

अधमर्षण मन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।

ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि-संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरीक्षमयो स्वः ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखे विनियोग वाक्य का पाठ करे—

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

फिर निम्नाङ्कित मन्त्र को एक वार पढ़कर एक वार आचमन करे :---

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योति रसोऽमृतम् ॥

अर्थः—हे जलरूप परमात्मन् ! तुम समस्त प्राणियों के भीतर उनकी हृदयरुप गुहा में विचरते हो, तुम्हारा सव ओर मुख है, तुम्हीं यज्ञ हो, तुम्हीं वषट्कार (इन्द्रादि का भाग हविष्य) हो और तुम्हीं जल, प्रकाश रस एवं अमृत हो ।

तदन्तर नीचे लिखे विनियोग—वाक्य का पाठमात्र करे—

ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दां स्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता, सूर्यार्घ्य-दाने विनियोगः ।

फिर सूर्य के सामने एक चरण की एँडी (पिछला भाग) उठाए हुए अथवा एक पैर से खड़ा होकर या एक पैर के आधे भाग से खड़ा

हो ॐ कार और व्याहृतियों सहित गायत्री मन्त्र को तीन वार पढ़कर पुष्प मिले हुए जल से सूर्य को तीन वार अघ्य दे। प्रातः काल और दोपहर का अर्घ्य जल में देना चाहिए। यदि जल न हो तो स्थल को भली भाँति जल से धोकर उसी पर अघ्य का जल गिरावें। परन्तु सांयकाल का अर्घ्य कदापि जल में न दे। खड़ा होकर अर्घ्य देने का नियम केवल प्रातः और मध्याह्न की संध्या में है, सायंकाल में तो बैठकर भूमि पर ही अर्घ्य जल गिराना चाहिए दोपहर की संध्या में एक ही वार अर्घ्य देना चाहिये और प्रातः एवं सायं संध्या में तीन तीन वार। सूर्याघ्य देने का का मन्त्र (अर्थात् प्रणवव्याहृतिसहित गायत्री मन्त्र) इस प्रकार है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस मन्त्र को पढ़कर 'ब्रह्मस्वरुपिणे सूर्यनारायणाय इदमर्घ्यं दत्तं न मम' ऐसा कहकर प्रातःकाल अर्घ्य समर्पण करें।

तदन्तर नीचे लिखे वाक्य को पढ़कर विनियोग करे—

उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, चित्रमिति कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरेकाधिका ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

तदनन्तर प्रातः काल में खड़ा होकर और सायंकाल में बैठे हुए ही अंजलि बाँधकर तथा दोपहर में खड़ा हो दोनों भुजाएं ऊपर उठाकर (यदि सम्भव हो तो) सूर्य की ओर देखते हुए "उद्वयम्' इत्यादि चार मन्त्रों को पढ़कर उन्हें प्रणाम करें। फिर अपने स्थान पर ही सूर्य देव की एक वार प्रदक्षिणा करते हुए उन्हें नमस्कार करके बैठ जाए।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तः उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।

हम अन्धकार से ऊपर उठकर उत्तम स्वर्ग लोक को तथा देवताओं में अत्यन्त उत्कृष्ट सूर्यदेव को भलीभाँति देखते हुए उस सर्वोत्तम ज्योतिर्मय परमात्मा को प्राप्त हों ।

ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।

अर्थ :—उत्पन्न हुए समस्त प्राणियों के ज्ञाता उन सूर्यदेव को छन्दोमय अश्व सम्पूर्ण जगत् को उनका दर्शन कराने [या दृष्टि] प्रदान करने के लिए ऊपर-ही ऊपर शीघ्रगति से लिए जा रहे हैं ।

ॐ चित्रं देवानामुदगायनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।।

अर्थ :—जो तेजोमयी किरणों के पुञ्ज हैं, मित्र, वरुण तथा अग्नि आदि देवताओं एवं समस्त विश्व के नेत्र हैं और स्थावर तथा जङ्गम—सबके अन्तर्यामी आत्मा हैं वे भगवान् सूर्य आकाश, पृथ्वी और अन्तरिक्ष लोक को अपने प्रकाश से पूर्ण करते हुए आश्चर्य रूप से उदित हुए हैं ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

अर्थ :–देवता आदि सम्पूर्ण जगत् का हित करने वाले और सबके नेत्ररूप वे तेजोमय भगवान् सूर्य पूर्व दिशा से उदित हो रहे हैं । [उनके प्रसाद से] हम सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक

जीते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक हम में बोलने की शक्ति रहे तथा सौ वर्षों तक हम कभी दीन दशा को न प्राप्त हों। इतना ही नहीं, सौ वर्षों से अधिक काल तक भी हम देखें, जीवें, सुनें, बोलें एवं कभी दीन न हों।

इसके बाद—

तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापति ऋर्षिर्यजुस्त्रिष्टुबृगुष्णिहौ छन्दसा सविता देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

इस विनियोग को पढ़कर निम्नांकित मन्त्र से विनयपूर्वक गायत्री—देवी का आवाहन करें :—

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

अर्थ :—हे सूर्यस्वरूपा गायत्री देवि! तुम देदीप्यमान तेजोमयी हो, शुद्ध हो और अमृत (नित्य ब्रह्मरूपा) हो। तुम्हीं परम धाम और नामरूपा हो। तुम्हारा किसी से पराभव नहीं होता। तुम देवताओं को प्रिय और उनके यजन की साधनभूत हो [मैं तुम्हारा आवाहन करता हूं]।

फिर नीचे लिखे विनियोग वाक्य को पढ़ें :—

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषि; स्वराण्महापंक्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से गायत्री को प्रणाम करें।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोजसेऽसावदो मा प्रापत्॥

अर्थ :—हे गायत्री ! तुम त्रिभुवनरूप प्रथम चरण से एकपदी हो। ऋक्, यजुः एवं सामरूप द्वितीय चरण से द्विपदी हो। प्राण, अपान तथा व्यान रूप तृतीय चरण से त्रिपदी हो। और तुरीय ब्रह्मरूप चतुर्थ चरण से चतुष्पदी हो। निर्गुण स्वरूप से अचिन्त्य होने के कारण तुम 'अपद' हो। [इसलिए वेद 'नेति-नेति' कहकर तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं] अतएव मन-बुद्धि के अगोचर होने से तुम सबके लिए प्राप्य नहीं हो। तुम्हारे दर्शनीय (अनुभव करने योग्य) चतुर्थ पद को, जो प्रपंच से परे वर्तमान शुद्ध परब्रह्म-स्वरूप हैं, नमस्कार है। तुम्हारी प्राप्ति में विघ्न डालने वाले वे राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि रूप पाप मेरे पास न पहुँच सकें। [अर्थात् परब्रह्मस्वरूपिणी तुमको मैं निर्विघ्न प्राप्त करूँ]

इसके अनन्तर नीचे लिखे विनियोग वाक्य को पढ़ें :—

ॐ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णि-गनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः, तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

फिर नीचे लिखे अनुसार गायत्री मन्त्र का कम-से-कम १०८ बार माला आदि से गिनते हुए जप करें। अधिक जहाँ तक हो अच्छा है। जप के समय गायत्री के तेजोमय स्वरूप का ध्यान और मन्त्र के अर्थ का अनुसंधान होता रहे तो बहुत ही उत्तम है। गायत्री-मन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धिमही धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

अर्थ:—हम स्थावर-जङ्गमरूप सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने

वाले उन निरतिशय प्रकाशमय परमेश्वर के भजने योग्य तेजका ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धि को सत्कर्मों की और प्रेरित करते हैं, तथा जो भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोकरूप सच्चिदानंदमय पर-ब्रह्म हैं।

तदनन्तर नीचे लिखे विनियोग-वाक्य का पाठ करें—

विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विश्व-कर्मा देवता सूर्यप्रदक्षिणायां विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मन्त्र से अपने स्थान पर खड़े होकर सूर्यदेव की एक वार प्रदक्षिणा करें:—

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

अर्थः—वे एकमात्र परमात्मा पृथ्वी और आकाश की रचना करते समय धर्माधर्मरूप भुजाओं और पतनशील पंच महाभुतों से संगत होते अर्थात् काम लेते हैं। तात्पर्य यह है कि धर्माधर्मरूप निमित्त और पंच भूत रूप उपादान कारणों से अन्य साधन की सहा-यता लिये विना ही सव की सृष्टि करते हैं। उनके सव ओर नेत्र हैं, सव ओर मुख हैं, सव ओर भुजाएँ हैं और सव और चरण हैं [अर्थात् सर्वत्र उनकी सभी इन्द्रियाँ हैं, अथवा सव प्राणी परमेश्वर के स्वरूप हैं, अतः उनके जो नेत्र आदि हैं, वे उनमें व्याप्त परमात्मा के ही नेत्र आदि हैं]।

इसके पश्चात् बैठकर निम्नांकित विनियोगका पाठ करें:—

ॐ देवा गातुविद इति मनसस्पतिर्ऋषिर्विराडनुष्टु-प्छन्दो वातो देवता जपनिवेदने विनियोगः।

ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा व्वाते धाः ।

अर्थः—हे यज्ञवेत्ता देवताओं! आप लोग हमारे इस जपरूपी यज्ञ को पूर्ण हुआ जानकर अपने गन्तव्य मार्ग को पधारें। हे चित्त के प्रवर्तक परमेश्वर। मैं इस जप-यज्ञ को आपके हाथ में अर्पण करता हूँ। आप इसे वायु-देवता में स्थापित करें।

इस मन्त्र को पढ़कर नमस्कार करने के अनन्तरः—

अनेन यथाशक्तिकृतेन गायत्रीजपाख्येन कर्मणा भगवान् सूर्यनारायणः प्रीयतां न मम ।

यह वाक्य पढ़े। इसके वाद—

उत्तमे शिखरे इति वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः ।

इस विनियोग को पढ़करः—

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि । ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥

अर्थः—हे गायत्री देवि! अव तुम अपने उपासक ब्राह्मणों के पास से उनकी अनुमति लेकर भूमि पर स्थित जो मेरू नामक पर्वत है, उसकी चोटी पर द्यिमान जो सुरम्य शिखर है, वहीं तुम्हार वास स्थान है उसमें निवास करने के लिए सुखपूर्वक जाओ।

इस मन्त्र को पढ़कर गायत्री देवी का विसर्जन करें, फिर निम्नांकित वाक्य पड़कर यह संध्योपासनकर्म परमेश्वर को समर्पित करें:—

अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ।

—✻—

देवपूजा की संक्षिप्त विधि

अपने-अपने इष्ट देव की पूजा का विधान शास्त्रों में वर्णित है। यहां पर षोडष उपचार विधि वताई जा रही है। शोडष-उपचार का मतलव है सोलह प्रकार से अपने-अपने इष्ट की पूजा करनी चाहिए। ये सोलह प्रकार निम्नलिखित है :—

(१) आवाहन, (२) आसन, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) स्नान, (७) वस्त्र, (८) यज्ञोपवीत, (९) गंध (चन्दन) (१०) पुष्प (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) दक्षिणा पान, (१५) आरती, परिक्रमा और (१६) मन्त्र पुष्पांजलि।

ध्यान के मन्त्र प्रत्येक देवता के अलग-अलग होते हैं, अन्य सभी स्नान वगैरह के मन्त्र एक ही होते है। प्रत्येक मन्त्र को वोलने के वाद जिस देवता का पूजन करना हो उस देवता के नाम मन्त्र को उस मन्त्र के पीछे जोड़ कर प्रत्येक विधि को करना चाहिए, जैसे आवाहन मन्त्र को वोलकर उसके पीछे गणपति का पूज कर रहे हो तो "गणेशं आवाध्यामि" शिवजी की पूजा कर रहे हो तो "शिवं आवाहयामि" इत्यादि अन्य विधियों के साथ भी पूजा किये जाने वाले देवताका नाम मन्त्र जोड़कर पूजन सामग्री अर्पित करनी चाहिये। पूजा प्रारम्भ करने के पूर्व अपने उपास्य देव का ध्यान करना चाहिये :—

कुछ देवताओं के ध्यान मन्त्र इस प्रकार से हैं :—

गणय तिजी का ध्यान मन्त्र महिम्न स्तोत्र के प्रारम्भ में पृष्ट सं० ३३ पर दिया गया है।

देवी जी का ध्यान मन्त्र।

नमो देव्यै महादेव्यै, शिवायै, सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

भगवान् कृष्ण का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है :—

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात् ।
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात् ।
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ।

अव भगवान् शिव का ध्यान मन्त्र प्रदर्शित करके पूजन विधि प्रदर्शित की जाएगी ।

भगवान् शिव का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है :—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं ।
रत्ना कल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिवसानं ।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिँसर्व्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥
आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥
ॐ भगवन्तं श्री शिवम् आवाहयामि स्थापयामि ।

इस मन्त्रका उच्चारण करके भगवान् शिव का आवाहन करें । इसके वाद—

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ इदमासनं समर्पयामि भगवते शिवाय नमः ।

इस मन्त्र को पढ़कर श्री भगवान शिव को आसन दें ।

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर भगवान् के चरण-कमलों को धोकर उस जल को अपने मस्तक पर धारण करना चाहिए ।

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोहऽस्तु ते ।।
ॐ हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि भगवते श्री शिवायः नमः ।

इस मन्त्र को पढ़कर श्रीशिव के कर कमलों में पवित्र जल छोड़ना चाहिए ।

सर्वतीर्थंसमायुक्तं सुगंधि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ।।
ॐ मुखे आचमनीयं समर्पयामि भगवते श्रीशिवाय नमः ।

यह मन्त्रकहकर श्री भगवान् शिव को आचमन कराना चाहिए ।

गंङ्गा सरस्वती रेवापयोष्णीनर्मदा जलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ।।
ॐ स्नानार्थं जलं समर्पयामि भगवते श्रीशिवाय नमः ।

यह मन्त्र कहकर भगवान् को शुद्ध जल से स्नान करावें ।

पयो दधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम् ।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ पञ्चामृतेन पश्चाच्छुद्धोदकेन स्नापयामि भगवते श्रीशिवाय नमः

यह मन्त्र पढ़कर पहले पंचामृत से फिर शुद्ध जल से भगवान् को स्नान करावे ।

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरूसम्भवम् ।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ गन्धोदकेन तत्पश्चाच्छुद्धोदकेन च स्नापयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़कर पहले चन्दन मिश्रित जल से फिर शुद्ध जल से भगवान् को स्नान करावे ।

सर्वभूषाधि के सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्येतां वाससी शुभे ॥
ॐ वस्त्रं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़कर श्री शिव को वस्त्र अर्पण करे ।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ यज्ञोपवीतं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

—यह मन्त्र पढ़कर भगवान् को यज्ञोपवीत पहनावे ।

श्री खंडचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ गन्धंसमर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

—यह मन्त्र पढ़कर भगवान् को चन्दन-रोली आदि लगाना चाहिए ।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।

मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

—यह मन्त्र कहकर भगवान् के मस्तक पर और नासिका के सामने आकाश में पुष्प छोड़ना तथा भगवान् के गले में माला पहनानी चाहिए ।

तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।

भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।।

ॐ तुलसीदलं निवेदयामि भगवते श्रीशिवाय नमः ।

यह मन्त्र कहकर भगवान् को तुलसीदल अर्पण करे ।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च तयायुधं ।

त्रिजन्म पाप सहारं एक बिल्वं शिवार्पणम् ।।

ॐ विल्व पत्रं निवेदयामि ।

इस मन्त्र से भगवान् शिव को बेल पत्र चढ़ावे ।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ धूपमाघ्रापयामि भगवते श्रीशिवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़कर भगवान् के सम्मुख अग्नि में धूप छोड़े ।

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ।।
ॐ दीपं दर्शयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़कर घी का दीपक जलाकर भगवान् के सामने रखना चाहिए और हाथ धो लेना चाहिए ।

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपाहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र से मिश्री, मिठाई और फल आदि भगवान् को अर्पण करना चाहिए ।

एलोशीरलवङ्गादि कर्पूर परिवासितम् ।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ।।
ॐ नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि भगवते
श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र से भगवान को अचमन करावें ।

पूगीफलं महद् दिव्यं नाग वल्लीदलैर्युतम् ।
एला चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ एला लवंग कर्पूरादि सहितं तांबूलं समर्पयामि
भगवते श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र को पढ़कर भगवान् की सेवा में इलायची, लोंग, कपूर वगैरह डालकर पान अर्पण करें ।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥
ॐ दक्षिणां समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र को पढ़कर अपनी श्रद्धा और औकात के अनुसार भगवान् की सेवा में दक्षिणा चढ़ावें ।

कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरंच प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्यमे वरदो भव ।।
ॐ कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

इस मन्त्र को पढ़कर भगवान् के सामने कपूर जलाकर आरती उतारें । (कपूर से पहले घी में भिगोयी हुई वत्ती "जोत" से आरती उतारना चाहिए) आरती के समय-जय शिव ॐ कारा, जय जगदीश हरे इत्यादि आरती भी पढ़नी चाहिये ।

आरती के वाद दोनो हाथ की अंजली वनाकर फूल से भगवान् को पुष्पांजली नीचे लिखे मन्त्रों से देवें ।

मन्त्र पुष्पांजलिः—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकं महिमानः सचन्तयत्रपूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥
ॐ राजाधिराजायप्रसह्य साहिने नमोवयं वैश्रवणायकुर्महे ।
समे कामान् काम कामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मूखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।

सम्बाहुभ्यांधमतिसम्पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन्देवएकः ।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्‌महे महादेवाय धीमहे तन्नोरुद्र-प्रचोदयात् ।।

ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानिच
भक्त्या दत्तानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ मन्त्र पुष्पांजलिं समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

इन मन्त्रों को पढ़कर भगवान् शिव के चरणों में फूलों की अंजली चढ़ावें ।

नीचे लिखे मन्त्र से भगवान् की प्रर्दक्षिणा (फेरी) करे ।

यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानि वै ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ।।

ॐ प्रदक्षिणां समर्पयामि भगवते श्री शिवाय नमः ।

अव नीचे लिखे मन्त्र से भगवान् शिव का ध्यान करे और प्रभु को प्रणाम करें ।

ॐ वन्दे देवमुपापति सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ।।

वन्दे सूर्यं शशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।

वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्देशिवं शंकरम् ॥

"मैं" संसार की उत्पत्ति के कारण भगवती उमा के पती, देवता ओमे श्रेष्ठ भगवान शिव को प्रणाम करता हूं। जिन्होंने गले में सांपो की माला पहन रखी है, हाथ में हिरन का चिन्ह धारण कर रखा है एवं जो संसार के समस्त प्राणियों के स्वामी "मालिक" है ऐसे भगवान् श्री शिव को मैं प्रणाम करता हूं। जिनके सूर्य, चन्द्रमा एवं अग्नि तीन नेत्र हैं जो विष्णु के भी इष्ट (प्रिय) हैं ऐसे भगवान् हर को प्रणाम करता हूं। भक्तों के आधार वरदान देने में "महा-दानी" कल्याण स्वरूप भगवान शिव शंकर को प्रणाम करता हूं।

इस प्रकार ध्यान करते हुए घुटने दोनों हाथ पांव को जमीन पर टेककर प्रभु को प्रणाम करें।

प्रणाम के वाद नीचे लिखे संस्कृत वाक्य को वोलकर किया हुआ पूजन भगवान को अर्पण करें—

ॐ अनेन यथा शक्ति कृतेन षोडशोपचार पूजनेन भगवान् श्री साम्बसदा शिवः प्रीयतां न मम ॥

यथाशक्ति इस षोड़शो प्रकार पूजन के द्वारा भगवान् शंकर पार्वती सहित प्रसन्न होवें॥

शिवजी की आरती

ॐजय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश शिव जय गौरी नाथ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शम्भो कृपया जगदीश
ॐ हर हर हर महादेव ॥१॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्प द्रुम विपिने, शिव कल्प द्रुमविपिने।
गुंजति मधुकर पुंजे-गुंजति मधुकर पुंजे कुंज वने गहने॥
कोकिल कूजति खेलति हंसावलि ललिता शिव हंसावलि ललिता
रचयति-कला कलापं-रचयति कला कलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥२॥

तस्मिल्ललित सुदेशे शाला मणिरचिता, शिव शाला मणिरचिता।
तन्मध्येहरनिकटे-तन्मध्ये शिवनिकटे गौरी मुदसहिता।
क्रीडां रचयति भूषां रंजित निजमीशं, शिव रंजित निजमीशं।
इन्द्रादिक-सुरसेवित ब्रह्मादिक-सुरसेवित प्रणमति ते शीर्षम्॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥३॥

विबुधवधूर्बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता, शिव हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते-किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते, शिव मृदङ्ग वादयते
क्वण-क्वण ललितावेणु: क्वण-क्वण ललिता वेणु मधुर नादयते॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥४॥

रुण-रुण चरणे रचयति नूपुर मुज्वलितं, शिव नूपुर मुज्वलितं।
चक्रावर्ते भ्रमयति-चक्रावर्ते-भ्रमयति कुरुते तां धिक् ताम्।
तां तां लुप चुप तालं नादयते, शिव तालं नादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं-अंगुष्ठांगुलिनादं लास्यकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥५॥

कर्पुरद्युति गौरं पंचानन सहितं शिव पंचानन सहितं
त्रिनयन शशिधरमोलि-त्रिनयन शशिधर मौलि विषधर कंठ
युतं ।
सुन्दर जटा कलापं पावक युत भालं, शिव पावक युत भालं
डमरु त्रिशूल पिनाकं-डमरु त्रिशूल पिनाकं करधृत नृक पालम् ।।
ॐ हर हर हर महादेव ।।६।।

शंख निनादं कृत्वा झल्लरि नादयते शिव झल्लरि नायदते
नीराजयते व्रह्मानीराजयते विष्णुर्वेदऋचां पठते ।
इति मृदुचरण सरोजं हृदि कमले धृत्वा, शिव हृदि कमले धृत्वा
अवलोकयति महेशं-शिव लोकयति सुरेशं ईशं अभि नत्वा ।।
ॐ हर हर हर महादेव ।।७।।

मुण्डैः रचयति मालां पन्नगमुपवीतं शिव पन्नग मुपवीतम्
वाम विभागे गिरिजा वाम विभागे गौरी रूपं अति ललितम् ।
सुन्दर सकल शरीरे मनसिजकृत भस्माभरणं, शिवकृत भस्मा-
भरणम्
इति वृषभध्वजरूपं हर शिवशंकररूपं तापत्रय हरणम् ।।
ॐ हर हर हर महादेव ।।८।।

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा शिव हृदये इति कृत्वा
रामं त्रिजटानाथं-शम्भो त्रिजटा नाथं ईशं अभिनत्वा ।
संगीतमेवं प्रति दिन पठनं यः कुरुते, शिव पठनं यः कुरुते ।
शिव सायुज्यं गच्छति-हर सायुज्यं गच्छति भक्त्यायः श्रुणुते ।।
ॐ हर हर हर महादेव ।।९।।

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश, शिव जय गौरी
नाथ ।
त्वंमां पालय नित्यं-त्वंमां पालयशम्भो, कृपया जगदीश ।।
ॐ हर हर हर महादेव ।।१०।।

अथ शिव नामावलि:

महादेव शिव शंकर शम्भो
उमाकान्त हर त्रिपुरारे
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन्
गङ्गाधर मृड मदनारे

हर शिव शंकर गौरीशं वन्दे गङ्गाधरमीशं,
रूद्रं पशुपतिमीशानं, कलये काशी पुरिनाथम्
जय शम्भो ! जय शम्भो शिव!
गौरी शंकर! जय शम्भो]

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा,
हर हरेति हरेरि हरेति वा ।
भव भवेति भवेति भवेति वा,
मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा ।
भज मनः शिवमेव निरन्तरम् ।।

अथ श्री महिम्नः स्तोत्रम्

गजाननं भूतगणाधिसेवितं,
कपित्थजम्बूफलचारू भक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाश कारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।।

(अर्थ) भूतगणों से सेवित, कैथ तथा जामून के उत्तम फलों को खाने वाले, शोकों को नष्ट करने वाले (तथा) जिनके चरण कमल ही विघ्नों के नियन्ता है उन कौरी पुत्र गजानन को (गणेश जी को) नमस्कार करता हूं।

पुष्पदन्त उवाच—

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादी नामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथाऽवा च्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्,
ममाप्येषः स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।।१।।

(अर्थ) हे तीनों पापों को हरने वाले शिवजी ! आपके महिमा की अन्तिम अवधि को न जानने वाले की (अज्ञानी की) प्रार्थना यदि अनुकूल नहीं है, तव तो ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों की वाणी भी आप में अयोग्य ही है। और यदि सभी अपनी-अपनी बुद्धि भक्ति के अनुसार स्तुति करते हुए निर्दोष है (तब तो)? मेरा भी प्रार्थना में यह (स्तोत्र कथन रूप) प्रयत्न अपवाद रहित है।

वस्तुतः—ब्रह्मादियों की स्तुति का विषय न होने पर भी भक्ति हित के लिए धारण किया गया आपका मनोरम साकार विग्रह सब को आकर्षित करता है।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो,
रतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

(अर्थ) आपकी महिमा तो वाणी तथा मन के मार्ग से परे है। जिसको वेद भी भागत्यगादि लक्षणों द्वारा आश्चर्यान्वित होकर प्रदिपादन करता है। वह (महिमा) किसकी स्तुति का विषय हो सकती है? (सगुण पक्ष में) कितने गुणों वाली है? (कारण) अनन्त गुणवाली होने से (निर्गुण पक्ष में) किस इन्द्रियादिक का विषय है? (अर्थात्) किसी का नहीं, नवनिर्मित साकार स्वरूप में तो किसका मन नहीं लग जाता! (किसकी) वाणी (नही तन्मय हो जाती)? अर्थात् आपके साकार स्वरूप में सभी के मन वाणी तन्मय हो जाते है। स्तुति आपके लायक न होने पर भी भक्त के सभी मलों को धोकर वाणी को पवित्र करती है। इस प्रकार उपयोगिता दिखाते हुए स्तुति करते है।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत,
स्तवब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरो विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथन पुण्येन भवतः,
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।

(अर्थ) हे ब्रह्मस्वरूप ! मधु में सनी हुई (अत्यन्त मधुर) सर्वथा पवित्र अमृतमय वाणी (वेदवाणी) को निर्माण करने वाले आपको बृहस्पत की वाणी भी क्या आश्चर्य में डालने वाली हो सकती है ! (कभी भी नही) फिर भी है त्रिपुर मथन करने वाले शिवजी ! इस (अपनी) वाणी को आपके गुण कथन से होने वाले पुण्यों से पवित्र करूँ इसी कारण इस (आपके युणगान रूप) कार्य में मेरी बुद्धि

वृत्ति तत्पर हुई है। आप ईश के स्तुत्य ऐश्वर्य में पापीजन कुतर्क पूर्ण विवाद करके लोगों को परमार्थ से पतित करने का व्यर्थ प्रयास करते है। यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्,
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः ॥४॥

(अर्थ) हे मोक्ष प्रदान करने वाले जगत् की उत्तपत्ति, पालन तथा संहार करने वाला तीनों (ऋक्, यजुः साम) वेदों से प्रतिपादित तत्व रूप, सत्व रज तथा तमोगुण के भेद से (ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र रूप) तीन शरीरों में विभक्त (बटा हुआ) जो आपका ऐश्वर्य है, उसके खण्डन के लिए कोई जड़ बुद्धि वाले लोग, त्रैलोक्य में भी जिनका कल्याण सम्भव नहीं, ऐसे लोगों को प्रिय लगने वाले परिणाम में वस्तुतः असुन्दर (अहितकर) निन्दा वाक्य वकते रहते हैं। वे लोग किन कुतर्कों से आपके ऐश्वर्य का खण्डन करके नास्तिकवाद सिद्ध करने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः,
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

(अर्थ) वह जगत् की सृष्टि करने वाला ईश्वर किस आधार पर बैठकर? किस इच्छा से? किसके लिए किस शरीर से? किन साधनों से युक्त हो? किस उपादान सामग्री से? तीनों लोकों को उत्पन्न करता है! इस प्रकार का यह (ऊपर कहा हुआ) कुतर्क जो तर्क का विषय ही नहीं है। ऐसे ऐश्वर्य वाले आपके विषय में अवसर

न पाकर विफल हुए जगत् को (संसारी लोगों को) भ्रम में डालने के लिए कुछ एक नष्ट बुद्धिजनों को वाचाल बना देता है। इस प्रकार प्रतिकूल तर्कों का निराकरण करके, अनुकूल तर्कों द्वारा प्रभु महिमा का प्रतिपादन करते हुए स्तुति करते हैं।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता,
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो,
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।

(अर्थ) हे देवाधिदेव शम्भो! ये (प्रत्यक्ष अनुभव में आने वाले) पृथ्वी आदि लोक सावयव होकर भी क्या जन्म रहित हो सकते है? (नहीं हो सकते) क्या जगत् के उत्तपति आदि कार्य चौदहों भुवन, कर्त्ता के वगैर ही होता है? (कर्त्ता के विना कोई भी कर्य नहीं हो सकता) यदि कहो कि ईश्वर स भिन्न कोई (जगत् की रचना) करता है तो विचित्र भूरादि लोकों की रचना करने में (उसके पास) कौन सी साधन सामग्री है ? (अर्थात् कुछ भी नहीं) कारण वह स्वतः सामर्थ्य हीन है। जिस लिए कि वे मन्दवुद्धि वाले मूढ लोग आपके विषय में शंका करते रहते हैं। इस प्रकार जड़ बुद्धि विपक्षियों के कुतर्कों का खण्डन करके अव श्री गन्धर्वराज स्तुति करते हुए यह वतलाते हैं कि साक्षात् या परम्परा से सम्पूर्ण शास्त्रों का तात्पर्य एक परमात्मतत्व में ही है।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रूचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।७।।

(अर्थ) तीनों वेदों (ऋक्, यजुः तथा साम) सांख्य दर्शन, योगदर्शन पशुपत शास्त्र (शैवमत) वैष्णव मत (नारदपाञ्चरात्र) ये सब अलग-अलग मतों में यह मेरा मत ही श्रेष्ठ है। और वही हितकर है। इस प्रकार इच्छाओं की विभिन्नता होने से सीधे टेढ़े अनेक मार्गों के अनुयायी मनुष्यों के लिए विभिन्न नदियों (से प्राप्त) समुद्र के समान आप ही प्राप्त करने योग्य हैं। अर्थात नदियां जैसे चाहें वैसे ही बहे परन्तु अन्ततः समुद्र में ही गिरती है, उसी प्रकार चाहे कितने ही मत क्यों न हो, उनके द्वारा प्राप्त आप ही होते हैं। इस प्रकार भगवत्स्वरूप विषयक सभी शंकाओं का मूलतः नाश करके अब "अर्वाचीन" (साकार) विगृह की स्तुति करते हैं।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः,
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विधति तु भवद्भ्रू प्रणिहितां,
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

(अर्थ) हे अवढर दानी ? बूढ़ा बैल, खाट का पावा, फरसा मृगचर्म, राख, सर्प तथा खोपड़ी इतने ही आपके गृह कार्य चलाने के साधन हैं। तो भी देवता लोग आपकी कृपा कटाक्ष से प्राप्त उस-उस (अपनी-अपनी) अलौकिक समृद्धि को धारण करते हैं। निश्चय ही स्वरूप में ही रमण करने वाले आपको काम आदि मिथ्या विषयों के लालच मोहित नहीं कर सकते। भगवान के निगुर्ण-सगुणरूप का निरूपण करके अब गन्धर्व राज स्तुति प्रकारों का निरूपण करते हुए स्तुति करते हैं।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्व ध्रुवमिदम्,
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव,
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

(अर्थ) हे त्रिपुर हर ! कोई (सांख्यपातञ्जलमतानुयायी) इस सम्पूर्ण जगत को नित्य (जन्म विनाश रहित) कहते हैं। दूसरे (बौद्ध लोग) तो सम्पूर्ण जगत् को अनित्य (क्षणिक) कहते हैं। तो अन्य (वैशेषिकादि) का कहना है कि इस संसार में नित्यता तथा अनित्यता भिन्न आधार वाले हैं। अर्थात् आकाश, काल दिशा आत्मा, मन और पृथ्वी आदि के परमाणु नित्य हैं, शेष कार्य द्रव्य अनित्य है। इन भेद वादी सम्पूर्ण मतों के विषय में आश्चर्य चकित सा हुआ भी उन्हीं के निरूपरण द्वारा आपकी स्तुति करता हुआ भी लज्जित नहीं हो रहा हूं। सचमुच वाचालता ही ढीठ हुआ करती है। यह प्रसिद्ध है कि एक वार ब्रह्मा और विष्णु में अपनी-अपनी श्रेष्ठा के लिए झगड़ा हो गया। उसमें शिवजी ने अपना निर्णय किस प्रकार दिया उसको वताते हुए स्तुति करते हैं।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः,
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरूगृणद्भ्यां गिरिश यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

(अर्थ) हे कैलाश नाथ शम्भो ! आग के खम्भे के समान शरीर धारण करने वाले आपका जो ज्योतिर्मय ऐश्वर्य (स्वरूप) था (उसका) अन्त पाने के लिए ब्रह्मा ऊपरको तथा भगवान् विष्णु नीचे को पूर्ण प्रयत्न से गए (परन्तु हजारों वर्षों में भी) अन्त न पा सके तव (हार मानकर) भक्ति और श्रद्धानत होकर भावभरी श्रेष्ठ स्तुति करते हुए वे दोनों, जो अपने आप (उस ज्योतिर्लिङ्ग के पास) खड़े हो गए। तभी उन लोगों को आपका दर्शन हुआ।) सच है आपका (भक्ति पूर्वक किया हुआ) अनुशरण क्या (कौन सा) फल नहीं देता ? (अर्थात् सर्व फल देता ही है) शिवजी कितने शीघ्र प्रसन्न होते हैं। और जो न देने योग्य है, उनको भी थोड़ी ही

उपासना मात्र से सब कुछ दे डालते हैं, इसका उदाहरण देते हुए स्तुति करते हैं।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं,
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचित चरणाम्भोरूहबले,
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

(अर्थ) हे स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण इन तीन शरीर रूपी पुरों को हरने वाले शिवजी ! जो दशमुख रावण ने विना प्रयत्न के ही तीनों लोकों को शत्रुओं से रहित निष्कण्टक वनाकर (कोई लड़ने वाला न मिलने से युद्ध की इच्छा शान्त न होने के कारण) युद्ध करने की खुजली से युक्त परवश सी हुई, वीस भुजाओं को धारण किया, यह सब (अपने) मस्तक रूपी कमल पक्तियों से सजाई गई आपके चरण कमलों की उपहार माला जिसमें (ऐसी) आपकी स्थिर भक्ति का ही प्रभाव है। भक्ति वश रावण पर अनुगृह दिखाकर अव दर्प के कारण उसका निगृह भी आपने कैसे किया। यह वताते हुए स्तुति करते हैं।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं,
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठ शिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

(अर्थ) आपकी चरण सेवा से प्राप्त वल वाली अपनी भुजाओं से हठ पूर्वक आपके निवास स्थान कैलाश पर ही (कैलाश को उखाड़ कर लंका ले जाने की इच्छा से) अजमाता (तौलता) हुआ वह त्रिभुवन विजयी मदोन्मत्त रावण आपके द्वारा सहज ही अँगूठे के अग्रभाग से धीरे-धीरे दवा देने पर (इतने नीचे धस गया) पाताल

में भी स्थिरता न पा सका, निश्चय ही समृद्धि प्राप्त होने पर कृतघ्न मोहित हो जाता है (पहली स्थिती के उपकार को भूल जाता है) वाणासुर ने आपकी चरण सेवा से कैसी समृद्धि प्राप्त की, यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

यदृद्धि सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती,
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेय स्त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयो,
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

(अर्थ) हे वरदाता शिवजी ! तीनों लोकों को सेवक के समान आज्ञाकारी वना लेने वाला वाणासुर देवराज इन्द्र की सवसे वड़ी-चढ़ी हुई समृद्धि को भी, जो नीचा कर दिया वह आपके चरणों की सेवा में रत रहने वाले, उस वाणासुर में कोई ग्राश्चर्य नहीं (कारण) आपके चरणों में शिर का झुकाना किसकी उन्नति के लिए नहीं होता (सवकी उन्नति करता ही है।) (अर्थात् आपकी सेवा अलभ्य वस्तु भी प्राप्त करा देती है।) मन्थन के समय समुद्र के रत्नों के साथ ही निकले हुए महा भयंकर कालकूट विष का पान आपने सहज में ही कर लिया, परन्तु उससे ही ग्रापकी शोभा वढ़ी, इस प्रकार भक्त भय हारी भगवान् की स्तुति करते हैं।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा,
विधेयस्यासीद्य-स्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो,
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

(अर्थ) ग्रसमय में ब्रह्माण्ड का नाश होते देख घवराए हुए देवता और असुरों पर कृपा करके (समुद्र से निकलते हुए) विष को

पी जाने वाले आपके गले में जो काला धव्वा पड़ गया वह धव्वा (आपके गले में शोभा नहीं देता, ऐसा नहीं, अर्थात् आभूषण के समान वह शोभा देता ही है) संसार के भय को दूर करने का ही जिनका स्वभाव है, उनमें यदि कोई विकार भी (दिखे तो वह भी) प्रशंसनीय ही होता है। (निन्दनीय नहीं, कारण उनका लक्ष्य जगत् को सुख देने का ही होता है) सर्वथा ध्यानावस्थित रहने वाले शिवजी को कामदेव ने समाधि से विचलित करने का प्रयत्न किया। उसका परिणाम क्या निकला, यह वताते हुए श्री पुष्पदन्ताचार्य स्तुति करते हैं।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्,
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः।१५।

(अर्थ) हे सर्वसमर्थ ! जिसके (जिस कामदेव के) सदा ही विजय प्राप्त करने वाले तीखे वाण देवता, असुर तथा मनुष्यों से भरे इस जगत् में कभी भी अपना कार्य पूरा किये विना लौटते ही नहीं वह कामदेव आपको दूसरे सामान्य देवता के समान जानकर (विघ्न करता हुआ) (जलकर भस्म हो जाने से) स्मरण का ही विषय रह गया निश्चय ही इन्द्रियजित महापुरुषों का अपमान हितकर नहीं होता। जगत् की रक्षा के लिए जानने वाला भगवान् शिव का नृत्य भी कितना विलक्षण है। यह दिखाते हुए गन्धर्वराज स्तुति करते हैं।

महीपादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघ रूग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा,
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।१६।।

(अर्थ) संसार की रक्षा के लिए आप नृत्य करते हैं (उस समय) अचानक आपकी पैर की चोट से पृथ्वी (भग्न हो जाने के भय से) सन्देह युक्त हो जाती है। (नृत्य में) घुमाई जाती हुई भुजा रूपी परिघ (शस्त्र विशेष) से पीड़ित नक्षत्र मण्डल वाला आकाश लोक भी भयभीत हो जाता है। खुली हुई जटाओं से जिसके किनारे टक्कर खाने से स्वर्ग लोक भी वारम्वार दुःखी हो जाता है। निश्चय ही वैभव की गति टेढ़ी ही होती है। अर्थात् आप तो जगत् की रक्षा के लिए नृत्य करते हैं पर त्रैलोक्य आपके महद् वैभव पूर्ण नृत्य को सहन न कर सकने से भयभीत हो जाता है। लोक में भी राजा के कहीं जाने पर वहां कि सामान्य जनता को त्रास होता ही है। आशुतोष शिवजी ने गंगा जी को अपनी जटा में धारण किया उसका वर्णन करते हुए गन्धर्वराज स्तुति करते हैं।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरूचि.,
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि,
त्येनेनैवो न्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ।।१७।।

(अर्थ) सम्पूर्ण आकाश में फैली हुई, (तथा) तारागणों की (चमचमाहट) से वढ़ा दी गई है। (श्वेत) फेन की शोभा जिसकी ऐसी, जो जल की धारा (आकाश गंगा) (वह) आपके मस्तक पर छोटे जल कण के समान प्रतीत हुई (परन्तु जब आपने जटा झाड़ कर उसे गिराया तो) उसी बूँद ने पृथ्वी को, करधनी के जैसे चारों ओर से समुद्र होकर द्वीप जैसा वना दिया। इसी के द्वारा आपका शरीर अलौकिक है (तथा) महिमा (विभूति) को धारण किया हुआ इस प्रकार अनुमान करना चाहिए। (अर्थात् इतनी वड़ी गंगा जिसके सिर में बूँद के समान हो गई वह शरीर कैसा? कितनी अलौकिक महिमा वाला होगा।) आपकी महिमा अनन्त है। अव त्रिपुरासुर के

अत्याचार से संतप्त जगत् का उद्धार एवं उसके वध के लिए अपनाए गए साधनों का वर्णन करते हुए स्तुति करते हैं ।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो,
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि,
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रा प्रभुधियः ॥१८॥

(अर्थ) पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथी, सुमेरु पर्वत को धनुष, चन्द्रमा और सूर्य को रथ के पहिए, और चक्रधारी विष्णु को बाण (बनाकर) त्रिपुरासुर रूपी तृण को भस्म करने की इच्छा वाले आपको इतना आडम्बर (तमाशा) रचने की क्या आवश्यकता थी? वास्तविक बात तो यह है कि अपने हाथ के खिलौने से खेलती हुई शक्तिमानों की बुद्धियाँ पराधीन नहीं हुआ करती । सारे संसार की रक्षा करने वाला सुदर्शन चक्र को भगवान् विष्णु ने कैसी अनन्य भक्ति के द्वारा शिवजी से प्राप्त किया यह बताते हुए गन्धर्वराज स्तुति करते हैं ।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो,
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

(अर्थ) हे त्रिपुरनाशक ! आपके चरणों में भगवान् विष्णु एक हजार कमल पुष्पों की भेट (प्रतिदिन के नियिमानुसार) चढ़ाने के लिए गए तब (चढ़ाते समय) एक कम हो गया । तो नियमित संख्या पूर्ति के लिए उन्होंने अपने आँख रूपी कमल को निकाल कर चढ़ा दिया वही भक्ति का आवेग (फल) सुदर्शन चक्र के रूप में परिणत होकर (आज भी) तीनों लोकों की रक्षा करने के लिए जाग रहा

है। अर्थात् विष्णु जी की भक्ति से प्रसन्न होकर आपने ही उन्हें सुदर्शन चक्र दिया जिससे वे विश्व की रक्षा करते हैं। यज्ञादि स्वर्ग के साधन माने गए हैं, फिर भी वह जड़ होने के कारण चैतन्यस्वरूप ईश्वर की आराधना विना स्वतन्त्र रूप से फल नहीं दे सकते। इसको युक्ति पूर्वक दिखाते हुए श्री गन्धर्वराज स्तुति करते हैं।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्वमसि फलयोगे क्रतुमतां,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

(अर्थ) यज्ञादि कर्मो के समाप्त हो जाने पर यज्ञादि कर्म करने वालों को (कालान्तर में) फल प्रदान करने के लिए आप सावधान रहते हैं। (कारण चेतन के विना जड़ में कर्मो के फल देने की सामर्थ्य नहीं है)। (भला) नष्ट हो गए कर्म चेतन पुरुष की अराधना के विना कहीं फल दे सकते है? (अर्थात् नहीं दे सकते) जिस लिए कि आप सावधानी पूर्वक किए कर्मो का नियमित फल देने में सावधान रहते हैं। इसलिए आपको यज्ञादि कर्मों के फल दिखाने का ठेका ले लेने वाला देखकर (भली-भाँति समझ कर) लोग वेद वाक्यों में श्रद्धा धारण कर (वेदोक्त) यज्ञादि कर्मो में दृढ़ता पूर्वक लगे रहते हैं। चैतन्य पुरुष शिव में अश्रद्धा रखकर उनकी वेदाज्ञा। के उल्लंघन का कैसा फल होता है, यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता,
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः।
क्रतु भ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

(अर्थ) हे निर्बल को शरण देने वाले ! (जिस यज्ञ) में प्राणियों के स्वामी (तत्कालीन प्रजापति) (तथा) यज्ञादि कर्म में बड़े कुशल दक्ष प्रजापति यज्ञ करने वाले (यजमान) थे। (त्रिकालदर्शी भृगु आदि) ऋषिजन ऋत्विगादि (बनकर यज्ञ करा रहे थे) ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादि देवता (आमन्त्रित) सदस्य (दर्शक) थे। फिर भी यज्ञादि के फल को देने में, स्वभाव से ही तत्पर रहने वाले आपके द्वारा यज्ञ का विध्वंस हो गया। निश्चिय ही श्रद्धा न रखकर (किए गए) यज्ञादि कर्त्ता को नाश के लिए ही होते हैं। सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा के द्वारा भी अमर्यादित व्यवहार होने पर भी आपने उन्हें कैसा दण्ड दिया यह दिखाते हुए गन्धर्वराज स्तुति करते हैं।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं,
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।२२।।

(अर्थ) हे नाथ ! (लज्जावश) मृगी का शरीर धारण कर लेने वाली अपनी कन्या के साथ बलात् रमण की इच्छा से मृग शरीर धारण करके दौड़े हुए कामी (काम वशीभूत) ब्रह्मा को देखकर पिनाकपाणि आप (मर्यादा भंग करने वालों को दण्ड देने के लिए) बहेलिये के समान उत्साह रूप छोड़ा गया तीव्र गति वाले बाण के भय से स्वर्ग तक भगे हुए भी उस ब्रह्मा को मानो फलक सहित शरीर में घुस गया हो। इस प्रकार अत्यन्त भयभीत एवं दुःखित करता हुआ आज भी नहीं छोड़ता। (आकाश में नक्षत्रों के क्रम से पहले रोहणी, फिर मृगशिरा तत्पश्चात् आर्द्रा है। मृगशिरा ही ब्रह्मा तथा आर्द्रा ही शिवजी का बाण माना गया है। जिसकी विस्तृत कथा पुराण प्रसिद्ध है) शिव की कृपा से ही उन्हें पतिरूप में प्राप्त करने वाली पार्वती महायोगी आपको अपने वश में समझ

लेती है। इस प्रकार भगवान् भक्त पर अत्यधिक कृपा का द्योतन जानते हुए स्तुति करते हैं।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्टवा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना,
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

(अर्थ) हे त्रिपुरान्तक ! हे इन्द्रियजित ! (संयमी) अपने (पार्वती के) अप्रतिम सौंदर्य के भरोसे धनुष धारण किए हुए पुष्पधन्वा कामदेव को सामने ही तुरन्त तिनके के समान भस्म हुआ देखकर भी हे वर देने वाले (पार्वती जी को वर देकर अर्द्धाङ्गिनी बनाने वाले) अर्द्धाङ्गिनी होने से पार्वती देवी यदि आपको स्त्रीजित (स्त्री अपने वश में हुआ) समझती है तो (यही कहना पड़ेगा) अहो निश्चय ही युवती स्त्रियाँ अत्यन्त भोली होती है (यथार्थत) समझ नहीं पाती। लोक दृष्टि से अमंगल पदार्थो को धारण कर भी, उनसे युक्त आपके स्वरूप को स्मरण करने वालों का आप मंगल ही करते हैं यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

स्मशानेश्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा,
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

(अर्थ) हे कामान्तक ! स्मशान में, आक्रीडा खेलना भूत पिशाचादियों के साथी (साथ में खेलने वाले), चिता की भस्म को सम्पूर्ण शरीर में लगाना (और) मनुष्यों की खोपड़ी से निर्मित माला (पहनना) एवं इस प्रकार आपका सम्पूर्ण (ऊपर कहा हुआ) चरित्र

भी अमंगलकारी, (भवतु, नाम) भले ही हो फिर भी, अवठर दानी शम्भो ! (आप) स्मरण करने वालों के लिए परम् कल्याण स्वरूप ही है। योगियों द्वारा साक्षात्कारणीय परम तत्व आप ही हैं। आपका स्मरण ही परम मंगल है, यह प्रतिपादन करते हुए स्तुति कर रहे हैं।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमभिधायात्तमरुतः,
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये,
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किलभवान् ॥२५॥

(अर्थ) (शमदम आदि षट साधन सम्पन्न परमहंस) हृदयकाल में अन्तर्मुख (वाह्य विषयों से निवृत्त) मन को स्थिर कर सप्रकार (शास्त्रोक्त) रीति से पञ्च प्राणों को निगृहीत कर प्रकृष्ट रोमाञ्च युक्त आनन्दाश्रुयुक्त नेत्र वाले होकर, जिस किसी सचिदानन्द को देखकर (वेदान्त वाक्यों द्वारा अखण्डा कार वृत्ति से साक्षात्कार कर) अमृत से भरे हुए तलाव में, निमग्न हुए के समान, आभ्यन्तर निरतिशय, सुख को धारण करते हैं, वह तत्त्व निश्चित आप ही हैं। ब्रह्माण्ड में प्रसिद्ध आठ विभूतियों में आप सर्वव्यापी शिव ही प्रकट हैं। यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह,
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमितिच ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रतु गिरं,
न विद्म स्तत्तत्वं वयमिह तु यत्वं न भवसि ॥२६॥

(अर्थ) आप सूर्य है, चन्द्रमा है, आप वायु है, आप अग्नि है, आप आकाश है, आप पृथ्वी है तथा आप ही आत्मा (चेतन) भी है

यही (आठ विभूतियाँ) शास्त्र प्रसिद्ध है। विद्वान् लोग (अपने में परिपक्व) बुद्धिमता मानने वाले आपके विषय में ऊपर कहे प्रकार से परिच्छिन्न वाणी बेशक वोले (उधृत करें) परन्तु हम तो यहाँ उस तत्व को नहीं जानते हैं। जो आप न हो। अर्थात् समस्त जड़ चेतन में सत्तास्फूर्ति रूप से केवल आप ही है। अतः सर्व स्वरूप आपको परिच्छिन्न कर कैसे कहें "यह सव ॐ ही है ऐसा कहने वाला आगम शास्त्र ॐ कार से अभिन्न सर्वरूप आपका ही कथन करता है।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा,
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्ण विकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरून्धानमणुभिः,
समस्तं त्यस्तं त्वां शरणद गृणत्योमिति पदम्।२७।

(अर्थ) हे निराश्रयों के आश्रयदाता शम्भो ! ॐ यह पद वाचक अकारादि (अकार, उकार, मकार) इन तीनों अक्षरों के द्वारा (अक्षरों में) विभाजित हुआ तीनों वेदों के रूप में (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) तोनों अवस्थाओं में (पृथ्वी, अन्तरिक्ष, स्वर्ग) तीनों लोकों में और (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) तीनों देवों के रूप में भी आपका ही (वाच्यार्थरूप से) प्रतिपादन करता है (तथा) अपरिच्छिन्न परिपूर्ण विकार रहित आपके (जागृत, स्वप्न, सुशुप्ति से परे) तुरीय स्वरूप का अति सूक्ष्म अर्धमात्रा, रूप ध्वनियों के द्वारा लक्ष्य कराता हुआ कथन (उपदेश) करता है। अर्थात् ॐ कार से अभिन्न शिव का ही कथन होता है। अव शिव नामाष्टक की महिमा एवं प्रभाव बताते हुए स्तुति करते हैं।

भवः सर्वो रूद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां,
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टक मिदम्।

अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव ! श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योऽस्मि भवते ।२८।

(अर्थ) हे देव भव (संसार का स्रष्टा) शर्व (शान्तिप्रदाता) दुष्टों को रुलाने वाला (जीवों को वन्धन से मुक्त करने वाला (भयंकर, संहारक) महादेव और भीम तथा ईशान (शासक)-इतने जो ये (भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र महादेव भीम तथा ईशान (प्रसिद्ध) आठ नाम है) इनमें से प्रत्येक नाम का वेद शास्त्र भी विचार करते हैं। ऐसे परमाराध्य मोक्षस्वरूप परमज्योति आपके लिए (मैं) मन, वाणी तथा कर्म से नमस्कार करता हूं। यथार्थ में दर्शन वही है जिसमें द्रष्टा को अपने परमाराध्य से भिन्न कुछ भी दृष्टिगोचर न हो। तथाविध सर्वव्यापक, दयासमुद्र भगवान् को नमस्कार करते हैं।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः ।।२६।।

(अर्थ) हे एकान्त प्रिय अन्तरात्मा (अत्यन्त समीप) आपको नमस्कार है तथा दूर से भी दूर (आपको) नमस्कार है। हे कामान्तक सूक्ष्मातिसूक्ष्म (आपको) नमस्कार है। और महान् से महान् (आपको) नमस्कार है। हे त्रिनेत्र ! वृद्धाति वृद्ध (त्रिकालातीत) (आपको) नमस्कार है। तथा युवासे युवा नित्य स्वरूप आपको नमस्कार है। सर्वात्मस्वरूप (आपको) नमस्कार है। और यह कारण (ब्रह्म) यह (कार्य ब्रह्म) इस प्रकार कहे जाने वाले सर्वाधार सर्वरूप आपको नमस्कार है। सृष्टि, स्थिति, संहार कर्त्ता तथा तीनों से अतीत सर्वाधार सर्वसाक्षी तुरीय पद भी आप ही है। यह दिखाते हुए स्तुति करते हैं।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

(अर्थ) जगत् की उत्पत्ति में रजोगुण प्रधान ब्रह्मास्वरूप आपके लिए वारम्वार नमस्कार है । प्राणियों के सुखार्थ (पालनार्थ) सत्व-गुण प्रधान होने से सुख देने वाले विष्णुरूप आपको वारम्वार नम-स्कार है । उसी जगत् के संहार के लिए तमोगुण प्रधान हरण करने वाले रुद्र रूप आपको वारम्वार नमस्कार है । तथा तीनों गुणों से परे निर्गुण अविद्यारहित शुद्ध चैतन्य तेजरूप मोक्ष पद प्राप्त कराने वाले कल्याण स्वरूप आप शिव के लिए अनन्त नमस्कार है। स्तोत्र का उपसंहार करते हुए नम्रता पूर्वक उसे प्रभु चरणों में समर्पित करते हैं ।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्वचेदं,
क्वच तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्,
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोप हारम् ॥३१॥

(अर्थ) हे अभिष्ट दाता कहाँ तो आपकी गुणों की सीमा से परे कालपरिच्छेद से रहित महिमा (ऐश्वर्य) तथा कहाँ यह (मेरा) अविद्यादि क्लेशों से प्राप्त स्वल्प ज्ञान वाला चित्त इस प्रकार की अयोग्यता वश डरे हुए मुझको आपके चरणों की भक्ति में उत्साहित (इस) स्तोत्ररूप पुष्पोपहार को आपके चरणों में अर्पित करवा दिया "अर्थात् यह स्तोत्र आपके चरण कमलों की भक्ति का ही प्रताप है" सचमुच आपकी महिमा का वर्णन सम्भव नहीं है।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे,
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

(अर्थ) हे समर्थ यदि समुद्र रूपी पात्र (दावात) में काले पर्वत के समान स्याही को (घोल दी जाए) तथा देवों का श्रेष्ठ वृक्ष (कल्पवृक्ष), की शाखा रूप लेखनी और सम्पूर्ण पृथ्वी रूप कागज लेकर साक्षात् सरस्वती सदा लिखती रहे तो भी आपके गुणों का पार नहीं पा सकती। (फिर दूसरों का तो कहना ही क्या ?)

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले,
ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो,
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतत्चकार ॥३३॥

(अर्थ) असुर देवता और मुनि अधिपतियों द्वारा आराधित कथित अनन्त गुणों की महिमा वाले (सचमुच) निर्गुण रूप चन्द्र-मौलि शंकर जी के अति सुन्दर इस (महिम्न) स्तोत्र को सम्पूर्ण गन्धर्वों में श्रेष्ठ पुष्पदन्त नामक गन्धर्वराज ने शिखरिणी छन्द में बनाया ।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्,
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र,
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

(अर्थ) जो पुरुष शुद्धचित्त होकर अनन्य भक्ति से प्रतिदिन इस (महिम्न) स्तोत्र का पाठ करता है। वह इस लोक में धन सम्पदा एवं आयु से परिपूर्ण पुत्रपौत्र वाला और यशवाला होता है। एवं शरीर त्यागने के वाद शिवलोक में रुद्रतुल्य होकर (निवास करता है)।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नःस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।३५।।

(अर्थ) उपदेश लेना दान तप तीर्थ ज्ञान (तथा) यज्ञादि क्रियायें (ये सब मिलकर भी) महिम्नस्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं होते हैं।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।।३६।।

(अर्थ) गन्धर्वराज पुष्पदन्त प्रणीत उपमारहित पावन (निर्दोष कल्याण कर मनोहर (ईश्वर का वर्णन) शिव महिमा से पूर्ण यह स्तोत्र समाप्त हो गया।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३७।।

(अर्थ) शिव से श्रेष्ठ दूसरा कोई देवता नहीं है, (और) माहिम्न से श्रेष्ठ दूसरा कोई स्तोत्र नहीं हैं। अघोर (शिव) मन्त्र से श्रेष्ठ दूसरा कोई मन्त्र नहीं है (तथा) गुरुतत्व से श्रेष्ठ तत्त्व नहीं है।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः,
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्,
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।३८।।

(अर्थ) बाल (द्वितीया चन्द्रमा को शिर पर धारण करने वाले देवाधिदेव महादेव का एक सेवक (भक्त) पुष्प दन्त नामक गन्धर्वों का राजा था उसने (प्रमाद के कारण) शिवजी के रोष से अपनी महिमा से पतित होने पर (शिव प्रसन्नता के लिए) इस अलौकिक शिव महिमा स्तुति की रचना की ऐसा सुना जाता है।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं,
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।

व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः,

स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥

(अर्थ) देवताओं तथा श्रेष्ठ मुनियों द्वारा पूजनीय स्वर्ग तथा मोक्ष के प्रमुख कारण भूत इस पुष्यदन्त विरचित पूर्ण सफल (राम वाण) स्तोत्र का मानव यदि कर वद्ध (हाथ जोड़कर अनन्य भाव से पाठ करता है) तो शरीरान्त होने पर किन्नरों के द्वारा पूजित होकर शिव लोक (परमधाम) को प्राप्त हो जाता है।

श्री पुष्पदन्तमुखपङ्कज निर्गतेन,

स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।

कण्ठ स्थितेन पठितेन समाहितेन,

सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

(अर्थ) श्री पुष्पदन्ताचार्य के मुखारविन्द से निकले हुए पाप-नाशक भगवान् को प्रिय लगने वाले स्तोत्र को कण्ठाग्र (याद) करके समाहित चित्त होकर पढ़ने से प्राणियों के ईश (स्वामी) सर्वेश भगवान् शिव अति प्रसन्न हो जाते हैं।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा, श्रीमच्छङ्करपादयो ।

अर्पिता तेन देवेशः प्रीयता मे सदाशिवः ॥४१॥

(अर्थ) इस प्रकार यह शब्द स्वरूपा (शब्दों से की गई) अर्चना (स्तुति) श्री (ऐश्वर्य) सम्पन्न भगवान शंकर के चरणों में समर्पित की गई (चडाई गई) उस समर्पण से देवों के ईश (देवाधिदेव) नित्य परम मङ्गल स्वरूप भगवान् शंकर मुझ पर (मेरे पर) प्रसन्न हों।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहिनं च यद्भवेम् ।

तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर ॥४२॥

(अर्थ) हे भगवान् ! (पाठ में) जो कोई भी अक्षर (या) शब्द छूट गया हो और जो मात्रा से रहित (उच्चारण) हो गया हो, उन सभी अपराधों को क्षमा करके परमेश्वर प्रसन्न होवें।

ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले,
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम् ।
डमड्-डमड्-डमड् डमन्निनादवड्डमर्वयं,
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

(अर्थ) जिन्होंने जटारूप अटवी (वन) से निकलती हुई गंगा के गिरते हुए प्रवाहों से पवित्र किए गए गले में सर्पों की लटकती हुई विशाल माला को धारण कर, डमरू के डम-डम शब्दों से मण्डित प्रचण्ड ताण्डव (नृत्य) किया, वे शिव जी हमारा कल्याण करें ।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी,
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके,
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

(अर्थ) जिनका मस्तक जटारूपी कड़ाह में वेग से घूमती हुई गंगा जी की चंचल तरङ्ग लताओं से सुशोभित हो रहा है ललाटाग्नि धक्-धक् जल रही है, सिर पर बाल चन्द्रमा विराजमान है, उन (भगवान शिव) में मेरा निरन्तर अनुराग हो ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर,
स्फुर द्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि,
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

(अर्थ) गिरिराज किशोरी पार्वती के विलास काल के उपयोगी शिरोभूषण से समस्त दिशाओं को प्रकाशित होते देख जिनका मन आनन्दित हो रहा है, जिनकी निरन्तर कृपादृष्टि से कठिन आपत्ति का भी निवारण हो जाता है; ऐसे किसी दिगम्बर तत्त्व में मेरा मन विनोद करे।

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा,
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे,
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

(अर्थ) जिनके जटा जूटवर्ती भुजङ्गों के फणों की मणियों का फैसला हुआ पिङ्गल प्रभापुञ्ज दिशारूपिणी अङ्गनाओं के मुख पर कुङ्कुमराग का अनुलेप कर रहा है, मतवाले हाथी के हिलते हुए चमड़े का उत्तरीय वस्त्र (चादर) धारण करने से स्निग्धवर्ण हुए उन भूत-नाथ में मेरा चित्त अद्भुत विनोद करे।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर,
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजंगराजमालया निबद्धजाटजूटक,
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

(अर्थ) जिनकी चरणपादुकाएँ इन्द्र आदि समस्त देवताओं के (प्रणाम करते समय) मस्तक वर्ती कुसुमों की धूलि से धूसरित हो रही है, नागराज (शेष) के हार से बंधी हुई जटावाले वे भगवान चन्द्रशेखर मेरे लिए चिरस्थायिनी सम्पत्ति के साधक हो।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिंगभा,
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं,
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥६॥

(अर्थ) जिसने ललाट-वेदी पर प्रज्वलित हुई अग्नि के स्फुलिङ्गों के तेज से कामदेव को नष्ट कर डाला था, जिसे इन्द्र नमस्कार किया करते है, सुधाकर की कला से सुशोभित मुकुट वाला वह (श्री महादेव जी का) उन्नत विशाल ललाटवाला जटिल मस्तक हमारी सम्पत्ति का साधक हो।

करालभालपट्टिकाधगद्-धगद्-धगज्ज्वलद्,
धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपंचसायके।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक,
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

(अर्थ) जिन्होंने अपने विकराल भालपट्टपर धक्-धक् जलती हुई अग्नि में प्रचण्ड कामदेव को हवन कर दिया था, गिरिराज किशोरी के स्तनों पर पत्रभङ्ग रचना करने के एकमात्र कारीगर उन भगवान त्रिलोचन में मेरी धारणा लगी रहे।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्,
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्भरीधरस्तनोतु कृतिसिन्धुरः,
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥८॥

(अर्थ) जिनके कण्ठ में नवीन मेघ माला से घिरी हुई अमावस्या की आधी रात के समय फैलते हुए दुरुह अन्धकार के समान श्यामता अङ्कित है, जो गजचर्म लपेटे हुए है, वे संसारभार को धारण करने वाले चन्द्रमा (के सम्पर्क) से मनोहर कान्तिवाले भगवान् गंगाधर मेरी सम्पत्ति का विस्तार करें।

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपंचकालिमप्रभा,
विलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबन्धकन्धरम्।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं,
गजच्छिदान्धकच्छिद तमन्तकच्छिदं भजे।।६।।

(अर्थ) जिनका कण्ठदेश खिले हुए नील कमल समूह की श्याम प्रभा का अनुकरण करने वाली हरिणी की सी छवि वाले चिन्ह से सुशोभित हैं तथा जो काम देव, त्रिपुर, भव (संसार) दक्ष-यज्ञ हाथी, अन्धकासुर और यमराज का भी उच्छेदन करने वाले हैं उन्हें मैं भजता हूं।

अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमञ्जरी,
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुनान्तक भवान्तकं मखान्तकम्,
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।१०।।

(अर्थ) जो अभिमान रहित पार्वती की कला रूप कदम्बमञ्जरी के मकरन्द स्रोत की वढ़ती हुई माधुरी के पान करने वाले मधुप है, तथा कामदेव, त्रिपुर, भव, दक्ष-यज्ञ हाथी, अन्धकानुसार और यमराज का भी अन्त करने वाले है, उन्हें मैं भजता हूं।

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजंगमश्वसत्,
विनिर्गमत्क्रमत्स्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद् धिमिद् धिमिद् ध्वनन् मृदंगतुंगमंगल,
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।११।।

(अर्थ) जिनके मस्तक पर वड़े वेग के साथ घूमते हुए भुजङ्ग के फुफकारने से ललाट की भयंकर अग्नि क्रमशः धधकती हुई फैल रही है, धिमि-धिमि वजते हुए मृदङ्ग के गम्भीर मङ्गल घोप के क्रमानुसार जिनका प्रचण्ड ताण्डव हो रहा है, उन भगवान शंकर की जय हो।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो,
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः,
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।।१२।।

(अर्थ) पत्थर और सुन्दर बिछौनों में साँप और मुक्ता की माला में बहुमूल्य रत्न तथा मिट्टी के ढेले में, मित्र या शत्रु पक्ष में तृण अथवा कमल लोचना तरुणी में, प्रजा और पृथ्वी के महाराज में समान भाव रखता हुआ मैं कब सदाशिव को भजूंगा ।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्,
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः,
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ।।१३।।

(अर्थ) सुन्दर ललाट वाले भगवान चन्द्रशेखर में दत्तचित्त हो अपने कुविचारों को त्याग कर गंगा जी के तटवर्ती निकुञ्ज के भीतर रहता हुआ सिर पर हाथ जोड़ डबडबायी हुई विह्वल आँखों से 'शिव' मन्त्र का उच्चारण करता हुआ मैं कब सुखी होऊँगा ?

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं,
पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं,
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ।।१४।।

(अर्थ) जो मनुष्य इस प्रकार से उक्त इस उत्तमोत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और वर्णन करता रहता है, वह सदा शुद्ध रहता है और शीघ्र ही सुरगुरु श्री शंकर जी की भक्ति प्राप्त कर लेता है,

वह विरुद्ध वति को नहीं प्राप्त होता; क्योंकि श्री शिवजी का अच्छी प्रकार चिन्तन प्राणि वर्ग के मोह का नाश करने वाला है।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं,
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां,
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भु ।।१५।।

(अर्थ) पूजा समाप्त होते समय रावण के गाये हुए इस शम्भु पूजन सम्वन्धी स्तोत्र का जो पाठ करता है, शंकर जी उस मनुष्य को रथ हाथी, घोड़ों से युक्त सदा स्थिर रहने वाली अनुकूल सम्पत्ति देते हैं।

दशानन रावण द्वारा बनाया शिव ताण्डव स्तोत्र समाप्त।

✲✲✲

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्टे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालं मोकारममलेश्वरम् ।।१।।
पारल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्या भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धेतु रामेशं नागेशं दारुकावने ।।२।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्ययम्बकंगौतमीतरे ।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ।।३।।
एतानि ज्योर्तिलिगानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्त जन्म कृतंपापंस्मरणेन विनश्यति ।।४।।

✲✲✲

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाशवासं भजेऽहं ॥१॥

(अर्थ) हे मोक्ष स्वरूप, यिभु, व्यापक, ब्रह्म और वेद स्वरुप, ईशान दिशा के ईश्वर तथा सबके स्वामी श्री शिवजी! में आपको नमस्कार करता हूं। निजस्वरूप में स्थित (अर्थात् मायादिरहित) (मायिक) गुणों से रहित, भेद रहित, इच्छा रहित, चेतन अकाश रूप एवम् आकाश को ही वस्त्र रुप में धारण करने वाले दिगम्वर (अथवा आकाश को भी आच्छादित करने वाले) आपको में भजता हूं।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं,
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकालकालं कृपालुं,
गुणागारसंसारपारं नतोऽहं ॥२॥

(अर्थ) निराकार, ओङ्कार के मूल तुरीय (तीनों गुणों से अतीत) वाणी, ज्ञान और इन्द्रियों से परे, कैलाशपति, विकराल, महाकाल के भी काल कृपालु, गुणों के धाम, संसार से परे आप परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूं।

तुषाराद्रि-संकाश-गौरं गभीरं,
मनोभूतकोटि-प्रभा-श्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा,
लसद्भालवालेन्दुकंठेभुजंगा ॥३॥

(अर्थ) जो हिमाचल के समान गौर वर्ण तथा गम्भीर है, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों की ज्योति एवं शोभा है, जिनके सिर पर

सुन्दर गंगा जी विराजमान है, जिनके ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा और गले में सर्प सुशोभित है।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्ड-मालम्,
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

(अर्थ) जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे, सुन्दर भ्रुकुटी और विशाल नेत्र हैं; जो प्रसन्न मुख, नीलकण्ठ और दयालु है, सिंह चर्म का वस्त्र धारण किए और मुण्डमाला पहने है, उन सबके प्यारे और सबके नाथ (कल्याण करने वाले) श्री शंकर जी को मैं भजता हूं।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयः शूल-निर्मूलनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥

(अर्थ) प्रचण्ड (रुद्ररूप) श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश वाले, तीनों प्रकार के शूलों (दुःखों) को निर्मूल करने वाले, हाथ में त्रिशूल धारण किए, भाव (प्रेम) के द्वारा प्राप्त होने वाले भवानी के पति श्री शंकर जी को मैं भजता हूं।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंद-संदोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

(अर्थ) कलाओं से परे, कल्याण स्वरूप, कल्प का अन्त (प्रलय) करने वाले सज्जनों को सदा आनन्द देने वाले, त्रिपुर के शत्रु सच्चि-

दानन्द धन, मोह को हरने वाले, मन को मथ डालने वाले, कामदेव के शत्रु, हे प्रभो ! प्रसन्न होइये प्रसन्न होइये।

न यावद् उमानाथ पादरविन्दं,
भजंतीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शान्ति-सन्तापनाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।७।।

(अर्थ) जब तक पार्वती के पति आपके चरण कमलों को मनुष्य नहीं भजते, तब तक उन्हें न तो इहलोक और परलोक में सुख शान्ति मिलती है और न उनके तापों का नाश होता है। अतः हे समस्त जीवों के अन्दर (हृदय में) निवास करने वाले प्रभो प्रसन्न होइये।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं,
प्रभो ! पाहि आपन्नमाशीश शम्भो ।।८।।

(अर्थ) मैं न तो योग जानता हूं। न जप और न पूजा ही। हे शम्भो! मैं तो सदा-सर्वदा आपको ही नमस्कार करता हूं। हे प्रभो! बुढ़ापा तथा जन्म (मृत्यु) के दुःख समूहों से जलते हुए मुझ दुखी की दुःख में रक्षा कीजिए। हे ईश्वर ! हे शम्भो! मैं आपको नमस्कार करता हूं।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।९।।

(अर्थ) भगवान रुद्र की स्तुति का यह अष्टक इन शंकर जी की तृष्टि (प्रसन्नता) के लिए ब्राह्मण द्वारा कहा गया। जो मनुष्य इसे भक्ति पूर्वक पढ़ते है, उर पर भगवान शम्भु पसन्न होते

✿✿✿

पशुपत्यष्टकम्

पशुपतिं द्युपतिं धरणीपतिं,
भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् ।
प्रणतभक्तजनार्तिहरं परं
भजत, रे मनुजा ! गिरिजापतिम् ॥१॥

(अर्थ) अरे मनुष्यो । जो समस्त प्राणियों, स्वर्ग पृथ्वी और नागलोक के पति हैं, दक्षकन्या सती के स्वामी है, शरणागत प्राणियों और भक्तजनों की पीड़ा दूर करने वाले हैं, उन परम पुरुष पार्वती-वल्लभ शंकर जी को भजो ।

न जनको जननी न च सोदरो,
न तनयो न च भूरिबलं कुलम् ।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं,
भजत रे मनुजा ! गिरिजापतिम् ॥२॥

(अर्थ) ऐ मनुष्यों ! काल के वश में पड़े हुए जीव को पिता, माता, भाई, वेटा अत्यन्त वल और कुल इनमें से कोई भी नहीं वचा सकता, इसलिए तुम गिरिजा पति को भजो ।

मुरजडिण्डिमवाद्यधिलक्षणं,
मधुरपञ्चमनादविशारदम् ।
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं,
भजत रे मनुजा ! गिरिजापतिम् ॥३॥

(अर्थ) रे मनुष्यों । जो मृदङ्ग और डमरू वजाने में निपुण है,

मधुर पञ्चम स्वर के गान में कुशल है, प्रमथ और भूतगण जिनकी सेवा में रहते हैं, उन गिरिजा पति को भजो।

शरणदं सुखदं शरणान्वितं,
शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम्।
अभयदं करुणावरुणालयं,
भजत रे मनुजा! गिरिजापतिम् ॥४॥

(अर्थ) हे मनुष्यों! शिव! शिव! शिव!, कहकर मनुष्य जिनको प्रणाम करता है, जो शरणागतों को शरण, सुख और अभय देने वाले हैं, उन दयासागर गिरिजा पति का भाजन करो।

नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं,
भुजगहारयुतं वृषभध्वजम्।
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं,
भजत रे मनुजा! गिरिजापतिम् ॥५॥

(अर्थ) अरे मनुष्यों! जो नरमुण्ड रूपी मणियों का कुण्डल और सांपों का हार पहनते हैं, जिनका शरीर चिता की धूलि से धूसर है, उन वृषभध्वज गिरिजा पति को भजो।

मखविनाशकरं शशिशेखरं,
सततमध्वरभाजिफलप्रदम्।
प्रलयदग्धसुरासुरमानवं,
भजत रे मनुजा! गिरिजापतिम् ॥६॥

(अर्थ) रे मनुष्यों। जिन्होंने दक्ष-यज्ञ का विध्वंस किया था; जिनके मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित है। जो यज्ञ करने वाले को सदा ही फल देने वाले हैं और जो प्रलय की अग्नि में देवता, दानव और मानवों को दग्ध करने वाले हैं, उन गिरिजापति को भजो।

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं,
मरणजन्मजराभयपीडितम् ।
जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं,
भजत रे मनुजा ! गिरिजापतिम् ॥७॥

(अर्थ) अरे मनुष्यों ! जगत् को जन्म, जरा और मरण के भय से पीड़ित, सामने उपस्थित भय से व्याकुल देखकर बहुत दिनों से हृदय में संचित मद का त्याग कर उन गिरिजा पति को भजो ।

हरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं,
यमजनेशधनेशनमस्कृतम् ।
त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं,
भजत रे मनुजा ! गिरिजापतिम् ॥८॥

(अर्थ) रे मनुष्यों ! विष्णु, ब्रह्मा और इन्द्र जिनकी पूजा करते हैं; यम और कुबेर जिनको प्रणाम करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं तथा जो त्रिभुवन के स्वामी हैं, उन गिरिजापति को भजो ।

पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं,
विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा ।
पठति संशृणुते मनुजः सदा,
शिवपुरीं वसते लभते मुदम् ॥९॥

(अर्थ) जो मनुष्य पृथ्वी पति सूरि के बनाए हुए इस अद्भुत पशुपति—अष्टक का सदा ही पाठ और श्रवण करता है, वह शिव-पुरी में निवास करता और आनन्दित होता है । इति ॥

—✶—

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगम्,
निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम् ।
जन्मजदुःखविनाशनलिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥१॥

अर्थः—ब्रह्मा-विष्णु तथा अन्य देवताओं से पूजित शिव लिंग। निर्मल शोभा से सुशोभित शिवलिंग। जन्म मरण के दुखों का नाश करने वाला शिवलिंग उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

देवमुनिप्रवरार्चितलिंगम्,
कामदहं करुणाकरलिंगम् ।
रावणदर्पविनाशनलिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥२॥

अर्थः—देवता "एवं" श्रेष्ट मुनियों द्वारा पूजित शिवलिंग। काम देव को भस्म करने वाला करुणाकर शिवलिंग। रावण के अभिमान को नाश करने वाला शिवलिंग, उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंगम्,
बुद्धिविवर्धनकारण लिंगम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥३॥

अर्थः—सभी प्रकार के सुगन्धित पदार्थों से लेप किया हुआ शिवलिंग। बुद्धि को वढ़ाने में कारण स्वरूप शिवलिंग। सिद्धों देवताओं

एवं दानवों द्वारा पूजित शिवलिंग। उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

कनकमहामणिभूषितलिंगम्,
फणिपतिवेष्टितशोभितलिंगम्।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशन लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥४॥

अर्थ:—स्वर्ण "एवं" श्रेष्ठ मणियों से शोभित शिवलिंग, शेषनाग को लपेटा हुआ शोभाय मान शिवलिंग। दक्ष के यज्ञ को नाश करने वाला शिवलिंग उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

कुम-कुम चंदन लेपित लिंगम्,
पंकजहारसुशोभितलिंगम्।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥५॥

अर्थ:—कुंकुम चन्दन का लेप किया हुआ शिवलिंग। कमल के हार को धारण करने से सुशोभित शिवलिंग। संचित (पूर्वजन्म के) पापों का भी विनाश करने वाला शिवलिंग उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

देव गणार्चितसेवितलिंगम्,
भावै र्भक्तिभिरे च लिंगम्।
दिनकरकोटिप्रभाकर लिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥६॥

अर्थ:—देव-गणों से पूजित एवं सेवित शिवलिंग। भाव-भक्ति "पूजित" शिवलिंग। हजारों सूर्य के समान कान्ति वाला शिव-गग, उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

अष्ठदलोपरिवेष्टितलिंगम्,
सर्वसमुद्भवकारणलिंगम् ।
अष्टदरिद्रविनाशनलिंगम्,
तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥७॥

अर्थः—अष्टदल कमल के मध्य में विराजमान शिवलिंग। सारे संसार की उत्पति का कारण स्वरूप शिवलिंग। आठ प्रकार के दरिद्र का नाश करने वाला शिवलिंग, उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

सुरगुरु-सुरवर-पूजितलिंगम्,
सुरवनपुष्पसदार्चितलिंगम् ।
परात्परं परमात्मक लिंगम्,
तत्प्रणामामि सदाशिव-लिंगम् ॥८॥

अर्थः—देव गुरु "वृहस्पति" एवं देवराज इन्द्र द्वारा पूजित शिव लिंग। देवताओं के वन के पुष्पों से सदा पूजा किया हुआ शिवलिंग। परात्पर परमात्मा स्वरूप शिवलिंग, उस शिवलिंग को सदा प्रणाम करता हूं।

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं, यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति, शिवेन सह मोदते ॥९॥

अर्थः—इस पुण्य दायक लिंगाष्टक का भगवान शिव के समीप "बैठकर" नित्य पाठ करनेसे शिव लोक की प्राप्ति होती है, और भगवान शिव के साथ आनन्द को प्राप्त करता है।

॥इति लिंगाष्टकम् ॥

श्रीशिवपञ्चाक्षरतोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय,
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय,
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।।१।।

अर्थः—जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र है, भस्म ही जिनका अङ्गराग है (अनुलेपन) है, दिशाएँ ही जिनका वस्त्र है (अर्थात जो नग्न है) उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर (न) कारस्वरूप शिव को नमस्कार हैं।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय,
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय,
तस्मै "म" काराय नमः शिवाय ।।२।।

अर्थः— गङ्गाजल और चन्दन से जिनकी चर्चा हुई है, मन्दार पुण्य तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पुजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथगुणों के स्वानी महेश्वर (म) कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

शिवायगौरीवदनाब्जवृन्द,
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय,
तस्मै 'शि' कराय नमः शिवाय ।।३।।

(अर्थ) जो कल्याण स्वरूप है, पार्वती जी के मुखकमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिए जो सूर्य स्वरूप है, जो दक्ष के यज्ञ का

नाश करने वाले है, जिनकी ध्वजा में बैल का चिन्ह है, उन शोभा शाली नीलकण्ठ (शि) कारस्वरूप शिव को नमस्कार हैं ।

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमाय,
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय,
तस्मै 'व' कराय नमः शिवाय ॥४॥

(अर्थ) वशिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र है, उन (व) कार स्वरूप शिव को नमस्कार हैं ।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय,
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय,
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥

(अर्थ) जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है जो जटाधारी है, जिनके हाथ में पिनाक हैं, जो दिव्य सनातन पुरुष है, उन दिगम्बर देव (य) कामस्वरूप शिव को नमस्का है ।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

(अर्थ) जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षरका पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है और वहाँ शिवजी के साथ आनन्दित होता है ।

—※—

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं,

कृष्णदामोदरं वासुदेवंहरिम् ।

श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं,

जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ।।१।।

अर्थः—अच्युत (कभी नाश न होने वाले) केशव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गोपियों के प्रिय प्राणेश्वर, तथा जानकी नायक (सीतापति) श्री रामचन्द्र को मैं भजता हूँ ।

अच्युतंकेशवं सत्यभामाधवं,

माधवंश्रीधरं राधिका राधितम् ।

इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं,

देवकी नन्दनं नन्दजं संदधे ।।२।।

अर्थः—अच्युत, केशव, सत्यभामा के पति लक्ष्मीपति, श्रीधर, राधिका द्वारा आराधित (अर्थात् श्री राधिका जी के इष्ट देव भगवान् श्रीकृष्ण) लक्ष्मीनिवास, परमसुन्दर, देवकीनन्दन, नन्द कुमार का चित्त से ध्यान करता हूं ।

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे,

रुक्मिणो रागिणे जानकी जानये ।

वल्लभी वल्लभा यार्चितायात्मने,

कंशविध्वंसिने वंशिनेतेनमः ।।३।।

अर्थः—विष्णु "व्यापक" विजयी शंख-चक्रधारी रुक्मिणी के परम प्रेमी जानकी जी जिनकी धर्मपत्नी है तथा जो व्रज की गोपिकाओं के प्राण आधार है, उन परम पूज्य आत्म स्वरूप कंस को मारने वाले, मुरली मनोहर आपको नमस्कार करता हूं।

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण,
श्रीपते वासुदेवार्जित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज,
द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक ॥४॥

अर्थः—हे कृष्ण ! हे गोविन्द ! हे राम ! हे नारायण ! हे लक्ष्मीपति ! हे वासुदेव ! हे अजेय ! (किसी से भी न हारने वाले) हे शोभा की खान (अर्थात् सबसे सुन्दर प्रभु) हे अच्युत ! हे अनन्त ! (जिसका कोई अन्त नहीं) हे अधोक्षज ! (अर्थात् इन्द्रियों से परे) हे द्वारिका नाथ ! हे द्रोपदी के रक्षक ! (आप मुझ पर भी कृपा कीजिये)।

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो,
दण्डकारण्यभू पुण्यताकारणः।
लक्ष्मणे नान्वितो वानरैः सेवितो,
अगस्त्य सम्पूजितो राघवः पातुमाम् ॥५॥

अर्थः—राक्षसों पर अत्यन्त कुपित होने वाले, सीता जी से सुशोभित दण्डक वन की भूमि को पवित्र करने वाले, श्री लक्ष्मण जी जिनका सदा अनुसरण करते हैं, वानर सेना से सेवित है, (प्रभु राम) और जो अगस्त्य ऋषि द्वारा पूजित हैं ऐसे प्रभु श्रीराम मेरी रक्षा करें।

धेनुकारिष्टका निष्टकिद्द्वेषिहा,
केशिहा कंसहृद्वंशिका वादकः!

पूतना कोपकः सूरजा खेलनो,

बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा ।।६।।

अर्थ:—धेनुक और अरिष्टासुर ग्रादिका अनिष्ट करने वाले शत्रुओं का विनाश करने वाले. केशी और कंस का वध करने वाले, वंशी के वजाने वाले, पूतना पर क्रोध करने वाले सूर्य पुत्री यमुना जी के तट पर खेलने वाले वाल गोपाल "प्रभु श्रीकृष्ण" मेरी सदा रक्षा करें।

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वासस,

प्रावृडंभोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।

वन्ययामालया शोभितोरःस्थलं,

लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ।।७।।

अर्थ:—विद्युत् के प्रकाश के समान जिनका पिताम्वर सुशोभित हो रहा है, वर्षा कालीन मेघों (वादलों) के समान जिनका शरीर शोभायमान है। जिनका वक्ष:स्थल वनमालाओं से विभूषित है और प्रभु के दोनों चरण सुवह की लालीमा के समान है, उन कमल जैसी सुन्दर वड़ी-वड़ी आँखों वाले श्री हरि को मैं भजता हूं।

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं,

रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयो: ।

हार केयूरकं कंकणप्रोज्जवलं,

किंकिणी मंजुलं श्यामलं तं भजे ।।८।।

अर्थ:—जिनका मुख घुँघराली अलकों से सुशोभित है, मस्तक पर मणियों का मुकुट शोभा दे रहा है तथा कपोलों पर कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं, उज्जवल (चम-चमाते हुए) हार केयूर

(वाजूवन्द) कंकण और किंकिणी कलाप से सुशोभित उन मंजुल-मूर्त्ति (मनमोहन) श्री श्याम सुन्दर को मैं भजता हूं।

अच्युतस्याष्टकं यः पठेत् इष्टदं,
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततःसुन्दरं कर्तृविश्वम्भरं,
तस्य वस्योहरिजोयते सत्वरम् ॥६॥

अर्थः—जो भी व्यक्ति इस अति सुन्दर छन्द वाले अच्युताष्टक का प्रेम सहित नित्य पाठ करता है। उस पर विश्वम्भर विश्व के कर्त्ता श्री हरि शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं।

॥ अच्युताष्टकं सम्पूर्णम् ॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षमिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥

अर्थः—हे देवण ! हम कानों से कल्याणमय वचन सुनें। यज्ञ कर्म में समर्थ होकर नेत्रों से शुभ दर्शन करें तथा अपने स्थिर अंग और शरीरों से स्तुति करने वाले हम लोग देवताओं के लिये हितकर आयु का भोग करें।

स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वतिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।

अर्थ:—महान् कीर्तिमान् इन्द्र हमारा कल्याण करें, परम ज्ञान-वान् अथवा परम् धनवान् पूषा हमारा कल्याण करे, जो अरिष्टों (आपत्तियों) के लिये चक्र के समान् (घातक) है वह गरूड़ हमारा कल्याण करे तथा वृहस्पति जी हमारा कल्याण करें।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति-राप: शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

द्यौ द्युलोक शान्ति होवे और आकाश में शान्ति हो भूमि पर शान्ति होवे जल में हो औषधियों में शान्ति होवे वनस्पतियों में शान्ति होवे सर्व्वदेवाओं में शान्ति हो सारे वेद विद्या आदि में शान्ति हो हर एक में शान्ति इसी प्रकार शान्ति रहे वह मुझको प्राप्त होवें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ॐ वह (परब्रह्म) पूर्ण है और यह (कार्यब्रह्म) भी पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है। तथा [प्रलयकाल में] पूर्ण [कार्यब्रह्म] का पूर्णत्व लेकर (अपने में लीन करके) पूर्ण [परब्रह्म] ही वचा रहता है। त्रिविध ताप की शान्ति हो।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

वैदिक प्रार्थना	हिन्दी अर्थ
सर्वे भवन्तु सुखिनः ।	सब सुखी हों ।
सर्वे सन्तु निरामयाः ।	सब निरोग हों ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।	सब शुभ दर्शन करें ।
मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।	किसी को दुःख न होवें ।
असतो मा सद्गमय ।	हे प्रभो ! असत्य से मुझको सत्य की ओर ले जाओ ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।	अंधकार से मुझे प्रकाश की ओर ले जाओ ।
मृत्योर्माऽमृतंगमय ।	मृत्यु से मुझे अमरता की ओर ले जाओ ।

जयघोष

धर्म की............जय हो

अधर्म का.........नाश हो

प्राणियों में.........सद्भावना हो

विश्व का.........कल्याण हो

—※—

शिवकी उदारता "भजन"

धन-धन भोला नाथ सदा शिव कौड़ी नहीं खजाने में।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर आप वसे प्रभु वीराने ॥
प्रथम वेद ब्रह्मा को दे दिया वने वेद के अधिकारी।
विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन, लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ॥
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावतसा वलकारी।
कुवेर को आपने दिया खजाना, होगये जगके कोठारी ॥
अपने पास पात्र नहीं रक्खा, मगन रहे वाघम्वर में।
ऐसे दीनदयाल मेरे प्रभु, भरो खजाना क्षण भर में ॥ धन-धन
अमृत पान कराके देवको, आप हलाहल पान किये।
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसी को, जिसने तेरा ध्यान किया ॥
भागीरथ को दे दी गंगा, सव जग ने उसमें स्नान किया।
वड़े-वड़े पापी को तारा, पल भर में कल्याण किया ॥
आप ध्यानमें मस्त रहो, और पियो पिआला अमृत का।
ऐसे दीनदयाल मेरे प्रभु, भरो खजाना क्षण भर में ॥ धन-धन
लंका तो रावण को दे दी, वीस भुजा दश शीश दिये।
श्री रामचन्द्र को धनुष वाण, और हनुमान को राम दिये ॥
मन मोहन को वंसी दे दी, मोर मुकुट का दान किये।
मुक्त हुए काशी के वासी, शिव-शंकर का ध्यान किये ॥
ऐसे दीन दयाल मेरे प्रभु, भरो खजाना क्षण भर में ॥ धन-धन
वीणा तो नारद को दे दी, हरि भजन का राग दिया।
ब्राह्मण को दे दिया कर्म, और संन्यासी को त्याग दिया ॥
जिस पर तुमरी कृपा हो गई, सो जग में भव पार हुआ।
जिसने ध्याया उसने पाया, महादेव तेरे दर पे ॥
आप सदा शिव ध्यान मग्न हो, दे दो सव कुछ पल भरमें।
ऐसे दीन दयाल मेरे प्रभु, भरो खजाना क्षण भर में ॥ धन-धन
धन-धन भोले नाथ सदा शिव, कौडी नहिं खजाने में।
भक्तों पर सर्वस्व लुटा कर, आप वसे प्रभु वीराने ॥

"स्वामी कोशलेन्द्रपुरी"

भजन १

तू दयाल दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी,
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ।। टेक ।।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो,
मोसमान आरत नहिं, आरति हर तोसों ।। तूदयल…
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो,
तातमातगुरुसखा, तू सब विधि मेरो ।। तूदयाल…
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिये जो भावै,
ज्यों त्यों "तुलसी" कृपाल ! चरण शरण पावै ।। तूदयाल…

"तुलसीदास"

भजन २

हे दयामय ! आप ही संसार के आधार हो ।
आप ही कतार हो हम सबके पालन हार हो ।। हे दयामय…
जन्मदाता आप ही माता पिता भगवान हो ।
सर्व सुखदाता सखा भ्राता हो तन धन प्राण हो ।। हे दयामय…
आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं ।
विनु कृपा के शांति सुख का सार पा सकते नहीं ।। हे दयामय…
दीजिये वह मति वने हम सद्गुणी संसार में ।
मन हो "मंजुल" धर्ममय और तन लगे उपकार में ।। हेदयामय…

"मंगुल जी"

गुरु-वन्दना ३

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
हूं अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ॥ हे मेरे···

खा रहा गोते हूं में भवसिन्धु के मझधार में।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ॥ हे मेरे···

मुझ में है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ॥ हे मेरे···

पाप बोझे से लदी नैया भंवर में आ रही।
नाथ दोड़ो अब बचाओ जल्द डूबी जा रही ॥ हे मेरे···

आप ही यदि छोड़ देगें फिर कहां जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ॥ हे मेरे···

सब जगह "मंजुल" भटक कर ली शरण अब आपकी।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी ॥ हे मेरे···

"मंजुलजी"

भजन ४

मैंने अपना बचपन खोया,
और जवानी भी खोई।
अब आया है अन्त समय,
तब झर-झर आँखें रोई ॥ मैंने···

उठो सपूतो हुआ सबेरा,
रोज जगाती माता थी।
हमनें करवट बदल बदल कर,
बेला बचपन की खोई ॥ मैंने···

यौवन आया नशा जवानी,
मैं न किसी को जाना।
सद्गुरु सद्ग्रन्थ सभी जगावे,
फिर भी होश न आई ।। मैंने…

अभी भी जो कुछ बाकी समां है,
उसकी कर तैयारी ।।
शिवजी शरण में जातू 'कोशल',
होगा भव सुख दाई ।। मैंने…

"स्वामी कोशलेन्द्रपुरी"

भजन ५

मैं नहीं मेरा नहीं तन किसका है दिया।
जो भी अपने पास है वह धन किसका है दिया ।।
देने वाले ने दिया वह भी कितनी शान से।
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से ।।
मैं मेरा यह कहने वाला मन किसका है दिया ।। मैं नहीं…

जो मिला है वह हमेशा पास रहता है नहीं,
कब बिछुड़ जाये कोई यह राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसका है दिया ।। मैं नहीं…

जग की सेवा छोड़ अपनी प्रीति प्रभु से कीजिए,
जिन्दगी का राज है यह जानकर जी लीजिए।
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया ।। मैं नहीं…

आरती जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।। प्रभु
भक्त जनों के संकट २ छिन में दूर करे ।।ॐ।।१।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मनका ।। प्रभु
सुख सम्पत्ति घर आवे २ कष्ट मिटे तनका ।।ॐ।।२।।

मात पिता तुम मेरे शरण गहू किसकी ।। प्रभु
तुम विन और न दूजा २ आस करूँ जिसकी ।।ॐ।।३।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।। प्रभु
पारब्रह्म परमेश्वर २ तुम सबके स्वामी ।।ॐ।।४।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।। प्रभु
मैं मूरख खल कामी २ कृपा करो भर्ता ।।ॐ।।५।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ।। प्रभु
किस विध मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमती ।।ॐ।।६।।

दीन-बन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ।। प्रभु
अपने हाथ उठाओ २ द्वार पड़ा तेरे ।।ॐ।।७।।
विषय विकार मिटाओ, पाप, हरो देवा ।। प्रभु
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ २ सन्तन की सेवा ।।
ॐ जय जगदीश हरे० ।।८।।

हमारी संस्थाएँ

श्री पलिवारमठ (संन्यास-आश्रम) मु० पो० पलिवार
जिला-गाजीपुर (उ०प्र०)

श्री गांधी जूनियर हाई स्कूल, मु० पो० पलिवार

श्री स्वामी दूलमपुरी चिकित्सालय-पलिवार

पुस्तक प्राप्ति स्थान

श्री पलिवारमठ (संन्यास-आश्रम) मुकाम पोस्ट
पलिवार, जिला-गाजीपुर (उ० प्र०)

श्री महावीर प्रसाद गुप्त, इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी,
वायी, ३३-लोहा मण्डी, नारायणा
नई दिल्ली-११००२८

श्री लक्ष्मण दास नागपाल
वी० ४० रघुवीर नगर, नई दिल्ली-११००२७